Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क़र्ज़ और अन्य कहानियाँ

सुधीर मौर्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क़र्ज़ और अन्य कहानियाँ

अग्निशेखर और क्षमा कौल

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No.... 5078
Dated 26/12/2023

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशक / लेखक की अनुमति के बिना इस पुस्तक को या इसके अंश को संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना या फ़िल्म आदि बनाना कानूनी अपराध है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क़र्ज़ और अन्य कहानियाँ

कहानी संग्रह

सुधीर मौर्य

अंजुमन प्रकाशन
इलाहाबाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN : 978-81-927746-5-7

प्रकाशक :
अंजुमन प्रकाशन
942, आर्य कन्या चौराहा
मुट्ठीगंज, इलाहाबाद – 211003,
उत्तर प्रदेश, भारत

आवरण सज्जा : श्री कम्प्यूटर्स
कम्प्यूटर कम्पोजिंग : श्री कम्प्यूटर्स
मुद्रक : भार्गव ऑफसेट, इलाहाबाद
© सुधीर मौर्य
संस्करण : प्रथम, पेपरबैक 2014

मूल्य भारत में ₹ 80
मूल्य विदेश में $ 6

KARZ AUR ANYA KAHANIYAN
(collection of Storys)
by SUDHEER MAURYA
Published By : ANJUMAN PRAKASHAN
942, Janta Pustak Bhandar
Arya Kanya Chauraha, Mutthiganj
Allahabad - 211003 Uttar Pradesh, India
Mob.: 09235407119, 09453004398
website - anjumanpublication.com
E-mail : anjumanprakashan@gmail.com

Edition: First, 2014

Price in india ₹ 80
Price for out side india $ 6

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रमणिका

अतीत 07

आग 14

दिल की मंजिल 20

कल्याणी का कोप 34

भाग्य 38

सुबह की कालिमा 42

गोश्त 49

कर्ज 53

खुसरो अमीर के बलि–बलि जायें 63

देवयानी 71

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अतीत

माँ ने उसे सहारा दे कर कार की पिछली सीट पर बैठा दिया और खुद उसके बगल में बैठ गयी। मुझे गाड़ी चलाने की हिदायत देकर, माँ उसे अपनी बोतल से पानी पिलाने लगी। न जाने क्यूँ आज मुझे माँ की इस बात का विरोध करने का मन कर रहा था। पर मैंने कभी माँ का किसी भी बात का विरोध नहीं किया था शायद इस वजह से मैं चाह कर भी कुछ बोल नहीं पा रहा था। पर मैंने अपना विरोध दर्ज करा दिया था गाड़ी न चला कर जिसे माँ समझ भी गयी थी। सो इस बार माँ ने आवाज़ में थोड़ी सख्ती लेते हुए गाड़ी चलाने को कहा, उनका लहजा आदेशात्मक था जिसकी अवहेलना मैं नहीं कर सकता था।

गाड़ी चलाते हुए मैंने बैक मिरर से देखा माँ उसे थर्मस से चाय निकाल कर पिला रही थीं। गाड़ी के हिचकोलों से जब उसके होंठों के पास ले जाते हुए कप से चाय छलक कर उसके कपड़े पर गिरी जो लगभग चिथड़ों की शक्ल में थे तो वो चिहुँक पड़ी। ठीक उसी वक्त माँ ने मुझे आराम से गाड़ी ड्राइव करने को कहा। माँ उसके साथ बड़ी आत्मीयता के साथ पेश आ रही थी, खैर ये तो मेरी माँ का स्वभाव ही है। पर न जाने क्यूँ मुझे लग रहा था वो माँ के साथ बैठने में खुद को सहज महसूस नहीं कर रही है।

घर पहुँचते ही माँ ने मुझे वापस मार्केट जाने को कहा। मेरे चुप रहने पर माँ बोली लड़की क्या तेरे कपड़े पहनेगी। मैं भी क्या करता कोई रास्ता न देख वापस मार्केट की तरफ रवाना हो गया।

कुछ तो इस वजह से कि, मुझे जनाने कपड़े खरीदने का कोई अनुभव नहीं था और कुछ खुन्नस की वजह से मैं घर काफी देर में पहुँचा। खुन्नस इस बात की थी कि, पता नहीं माँ क्यूँ उस भिखारिन को उठा कर घर ले आई। उसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर लाने की क्या जरुरत थी, वही पर उसके हाथ में दस-बीस रुपये रख देने चाहिए थे। और ऊपर से घर लाकर उस के लिए कपड़े वगैरह का इंतज़ाम।

घर पहुँचा तो देखा वो मेरा पायजामा और शर्ट पहन कर खाना खा रही थी। उसका चेहरा तमाम फोड़े फुँसियों से भरा था, सर मुक्कमलगंजा था न जाने कौन सी बीमारी से उसके बाल झड़ गए थे। हाथ-पैर भी कोई त्वचा रोग से पीड़ित थे। कुल मिला कर वो एक बीमारी और गन्दगी का ढेर थी। अगर माँ वहाँ न होती तो मैं उसी वक्त उसे वहाँ से रुखसत कर देता।

पर माँ, वो तो वहीं थीं। मेरे हाथ में थैला देख कर बोली, अरे बहुत देर कर दी, चल उसको दे दे। मैंने वो थैला उसी टेबल पर रख दिया जिस पर बैठ कर वो खाना खा रही थी। एक नज़र मैंने उस पर डाली फिर पलट कर अपने कमरे मैं चल दिया। अचानक न जाने क्या सोच कर मैं पलट कर उसे गौर से देखने लगा। मुझे यूँ लगा जैसे की वो किसी अच्छे घर से ताल्लुक रखती है, उसका चम्मच और काँटे से खाना खाने का स्टाइल इस बात की चुगली कर रहा था।

जब हम अपने एक जानने वाले से मिल कर लौट रहे थे, न जाने कहाँ से उस पर माँ की नज़र पड़ गयी थी। कुछ लड़के शोर-गुल मचाकर उसे परेशान कर रहे थे और कुछ तो उस पर पत्थर के छोटे टुकड़े भी मार रहे थे। इस रास्ते से कोई चार-पाँच घंटे पहले भी मैं गुजरा था, मगर उस वक्त वो उस जगह मुझे नज़र नहीं आई थी।

वो खुद को लड़को से बचाने का प्रयास कर रही थी पर उसके शरीर पर कंकड़ जा कर टकरा रहे थे। शरीर पर पहले से जख्म होने की वजह से वो दर्द से कभी-कभी चीख पड़ती थी। उसकी इन्हीं चीखों ने माँ को आकर्षित किया था और उन्होंने मुझे कार रोकने को कहा था।

माँ ने उसके लिए एक कमरा भी व्यवस्थित करवा दिया था। न जाने क्यूँ एक बीमार, पागल जैसी भिखारिन के लिए माँ का इतना आत्मीय होना मुझे अखरा था। पर मैंने बचपन से माँ के धार्मिक और सदैव दूसरों की सेवा में तत्पर रहने के स्वभाव को जानता था। इसलिए इस बात को मैंने इसी श्रेणी मैं रखा

मैंने अंदाजा लगाया था वो जरुर जवान थी और यदि इस हालात में न होती तो कतई तेइस-चौबीस साल से ज्यादा न थी। माँ ने घर की नौकरानी को उसका विशेष ध्यान रखने को कहा था और अगले दिन खुद उसको साथ ले कर उसके लिए दवाएँ ले आई थी। एक बात और थी, मैंने महसूस किया था वो माँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के सामने आते ही बेहद असहज हो जाती थी। इसका कारण क्या था मैं उस वक़्त तक नहीं जान पाया था।

उसे घर आये दो या तीन दिन हुए होंगे जब मुझे मौसी जी के बीमार होने की खबर मिली। मेरे मौसा जी तो शादी के एक-डेढ़ सालबाद ही परलोक सिधार गए थे। मेरी मौसी का एक ही लड़का था सत्रह-अठारह साल का। मौसी, माँ से छोटी है उनकी देख-रेख के लिए माँ को वहाँ जाना पड़ा। जाते वक़्त माँ ने मुझे सख्त हिदायत दी कि लड़की का मैं विशेष ध्यान रखूँ, जिसे मैंने न चाहते हुए भी एक आज्ञाकारी बेटे की तरह मान लिया। जाते वक़्त माँ ने मुझे उसके क्लीनिक ले जाने का शेड्यूल वगैरह भी समझाया।

उस लड़की की देखभाल मैंने अपने ऊपर एक बोझ समझ कर सँभालली। शुरू-शुरू में मुझे उसके पास जाने, उससे बात करने मैं बड़ी कोफ़्त होती। कभी-कभी तो मारे उबकाई के जी बेहाल हो जाता। पर धीरे-धीरे मैं अभ्यस्त हो चला था, और मैं मन से उसकी देखभाल करने लगा।

मेरी देखभाल या फिर मेरी माँ की परोपकार करने की प्रवत्ति की वजह से वो लड़की बड़ी तेज़ी से स्वस्थ होने लगी। मौसी की बीमारी लम्बी खींचने की वजह से माँ को वही रुकना पड़ा। वो फ़ोन पर उस लड़की का नियमित हाल चाल लेती रहती थी।

उसके शरीर के जख्म बड़ी तेज़ी से भरने लगे थे और उनके नीचे की गोरी त्वचा नुमायाँ होने लगी थी। सर के झड़े बाल उग आये थे और वो इतनी तेज़ी से बढ़ रहे थे ज्यों किसी जवान लड़की के बढ़ा करते है। उसका चेहरा निखर चला था। और सच पूछो तो उसका चेहरा मुझे ऐसा लगा जिसकी तलाश मैं अपनी प्रेमिका या पत्नी के चेहरे में किया करता था। ये बात और थी कि, अब तक किसी भी लड़की से मैं प्यार के मामले में उलझा नहीं था।

उसे घर लाने के तक़रीबन दो महीने बाद वो पूर्ण स्वस्थ हो चुकी थी। वो एक बाईस-तैईस साल की छरहरे बदन की गोरी रंगत लिए एक ऐसी लड़की थी, जिसकी सुन्दरता, नैन नक्श और फिगर का कोई भी दीवाना हो सकता था।

मेरी उम्र भी लगभग बीस साल रही होगी शायद उससे दो-तीन साल मैं छोटा ही रहा होऊँगा। मुझे इंटर करने के बाद ही बैंक में क्लर्क का जॉब मिल गयी था और मैं इससे खुश भी था माँ के पास इकट्ठी पूँजी से एक नया घर बनवा लिया था और फाइनेंस से एक ऑल्टो गाड़ी भी ले ली थी। पिता जी का स्वर्गवास हो चुका था पर उनकी पेंशन माँ के नाम आती थी। यूँ आर्थिक रूप से कोई भी समस्या नहीं थी। ऊपर से मैं और माँ दो लोगों का ही परिवार था। माँ ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर के कामकाज के लिए एक नौकरानी रखी थी।

उस शाम जब मैं यूँ ही रोज़ की तरह घर से बाहर बेमकसद टहलने जा रहा था तो उसने मेरा नाम ले कर मुझे आवाज़ दी। उसने पिछले दो महीनों में पहली बार मेरा नाम लिया था

उसने कहा ऋषि– जरा रुक जाईये, मैं चाय बनाती हूँ पीकर जाईये।

उसके होठों से अपना नाम सुनकर मुझे यूँ लगा जैसे मेरे दिल के तारो में सरगम बज पड़ी हो। ठीक उसी वक़्त मैंने भी उसका नाम पहली दफा लिया था।

ठीक है अस्मिता – उसका ये नाम मुझे घर की नौकरानी ने बताया था।

यूँ एक सिलसिला चल पड़ा, शाम चाय का, साथ–साथ बाहर जाकर बेमकसद टहलने का। हम काफी नजदीक आने लगे थे या यूँ कहो एक– दूसरे के दोस्त बन चले थे, उसके बोलचाल के ढंग से मैं समझ गया था वो तालीम याफ्ता लड़की है। पर फिर भी मैंने उसके अतीत को कभी नहीं कुरेदा था।

फिर वो शाम आई जब मैंने उसे प्रपोज किया। उस दिन चाय पीने के बाद जब वो कप लेकर किचन की तरफ जा रही थी तो मैंने पीछे से उसकी बाँह पकड़ कर रोक लिया। उसने सवालिया निगाहों से मेरी तरफ देखा। उस वक़्त उन गहरी काली आखों मैं मुझे खौफ की परछाई नज़र आई। इस खौफ को मैं बखूबी समझ सकता था। निश्चय ही ये खौफ उसके साथ होने वाले बलात्कार की आशंका का था। पर उसका ये खौफ उस वक़्त अचरज मैं तब्दील हो गया जब मैंने उसके चेहरे के नज़दीक अपने चेहरे को लाकर कहा।

अस्मिता – मैं तुमसे मोहब्बत करने लगा हूँ। मैं चाहता हूँ तुम इस घर में अब मेरी महबूबा और शरीके हयात की हैसियत से रहो।

कुछ लम्हे वो मुक्कमल खामोश रही फिर मेरे हाथ से अपनी बाँह छुड़ाते हुए बोली, ये मुमकिन नहीं ऋषि। इतना कह कर वो किचन की तरफ चल दी।

मैं भी उसके पीछे चलते हुए बोल नामुमकिन की वजह क्या है अस्मिता– क्या मैं तुम्हारे काबिल नहीं ?

मुझे यूँ लगा जैसे उसने मेरी बात सुनी ही नहीं और चुपचाप चलती हुई किचन की तरफ आ गयी।

उस वक़्त जब वो वाश–बेसिन मैं चाय के जूठे बर्तन रख रही थी तब मैंने उसे कंधे से पकड़ कर तेज़ी से अपनी तरफ घुमा लिया वो नज़रे झुक कर खड़ी हो गयी मैंने कहा अस्मिता – तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने दायें हाथ से मेरे बायें गाल को सहलाते हुए अस्मिता बोली– ऋषि,मुझे मोहब्बत करने की इजाज़त मेरा अतीत नहीं देता।

मुझे अतीत से कोई सरोकार नहीं, मैंने अपने हाथ से उसकी कोमल हथेली को अपने गाल पर दबाते हुए बोला।

नहीं ऋषि मेरे अतीत से तुम्हारा ही सरोकार है वो मेरे हाथ से अपना हाथ जुदा करते हुए बोल रही थी, तुम्हें विनीत याद है क्या?

विनीत– मुझे झटके से उसकी याद आ गयी। मेरे फूफा का लड़का, मुझसे कोई पाँच साल बड़ा, मेरे घर पर रह कर पढ़ाई करता था, मेरी माँ के साथ। उस वक़्त मैं अपने पापा के साथ रहता था जो वायुसेना में थे और मैं क्लास ऐट पास करने के बाद उन्ही के साथ रह कर पढ़ता था। घर तो बस गर्मियों की छुट्टियों में ही आता था।

मुझे याद आया जब मैं बैंक में जॉइनिंग के लिए फिरोजाबाद में था उस वक़्त विनीत भईया ने हमारे घर में ही फाँसी लगा कर खुदकुशी कर ली थी। मुझे खबर देर से मिली सो मैं घर न पहुँच सका था। बाद में मेरे दोस्तो ने बताया था वो किसी लड़की को बहुत प्यार करते थे। पहले वो लड़की भी उन्हें चाहती थी, पर अचानक लड़की के अंदर महत्वाकाँक्षाएं पैदा हो गयी। वो सुंदर तो थी ही बस क्षेत्रीय विधायेक के प्रेम–पाश में बंधती चली गयी। उसके साथ गाड़ी में टहलना, गिफ्ट लेना और पार्टियों में वो अक्सर जाने लगी।

एक दिन जब भैया बाज़ार में उसके मिनी स्कर्ट पहन कर घूमने पर समझाने लगे तो उसने सबके सामने भैया को एक थप्पड़ मार दिया। बस भैया यह अपमान सह न सके और उन्होंने उसी रात दुनिया छोड़ दी।

कुछ दिन बाद जब उसी घर में मेरे पापा की ह्रदय आघात से मृत्यु हो गयी तो माँ के कहने पर वो घर बेचकर हम इस नए शहर में आ गए जहाँ मेरी जॉब थी उस वक़्त जब मैंने उस लड़की से मिलने की कोशिश की तो मेरे दोस्त ने बताया वो लड़की विधायक के साथ शादी से पहले ही हनीमून मनाने शिमला चली गयी है। मैंने भी उससे मिलने का विचार छोड़ दिया, आखिर मिल के होता भी क्या।

मैं अस्मिता के उसी तरह कन्धे पकड़े हुए बोला, विनीत भैया की मौत से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?

और उस वक़्त वह नीचे ज़मीन को देख रही थी जब उसने कहा– ऋषि, वो लड़की मैं ही हूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यूँ लगा जैसे मेरे सर पर क्लस्टर बम गिरा हो और मैं अपने अरमानों सहित ज़मीदोज़ हो गया होऊँ। मैंने तुरंत उसके कन्धों को अपने हाथों की गिरफ्त से आज़ाद कर दिया और बिना उससे कुछ कहे ड्राईंग रूम में आ के बैठ गया। मैं समझ गया था अस्मिता माँ के सामने क्यूँ असहज रहती थी क्यूँ कि वो माँ को पहचान गयी थी पर शायद माँ उसकी दयनीय हालत देख कर उसे पहचान नहीं पाई थी।

वो अस्मिता ही थी जो मेरे पाँव के करीब आकर बैठ गयी थी। मैंने अपने पाँव खींच लिए थे, और उसे देख कर अपनी आँखे बंद कर ली थी।

मेरी इस बेरुखी पर उसने बुझे लहजे में कहा था– ऋषि, मैंने तो पहले ही कहा था मेरा अतीत मेरी ज़िल्लत के सिवा और कुछ नहीं है।

मैंने उसकी बात का सिर्फ इतना जवाब दिया– अस्मिता मैंने तुम्हें प्यार किया पर तुम विनीत भैया की मौत की ज़िम्मेदार हो। जानती हो वो मेरे बुआ–फूफा के इकलौते बेटे थे।

वह ज़मीन पर आगे खिसक कर वापस मेरे पाँव के करीब आई और इस बार मैंने पैर खींचे नहीं थे। वो यूँ ही मेरे क़दमों के पास ज़मीन पर बैठे हुए बोली– ऋषि, हाँ मैं विनीत की कातिल हूँ, मेरे किये हुए अपमान ने उसकी जान ले ली। मेरी आखों पर विधायक के पैसों की रंगीनी चढ़ी थी। वो शिमला में मुझे हर रात भोगता रहा, एक साल में तीन–तीन अबार्शन हुए मेरे। पत्नी की जगह उसने रखैल बना कर रखा मुझे। और फिर उस रात जब वो मुझे अपने दूसरे विधायक दोस्त को परोसने की बात कर रहा था, तो मैं मौका देख कर भाग निकली। विधायक के आदमी मुझे ढूँढ़ रहे थे मैं उनसे बचती फिर रही थी, तभी और मनचले मुझे अपनी हवस से रौंदना चाहते थे। घर वापस नहीं जा सकती थी, बस उनसे बचने के लिए भिखारिन का गन्दा रूप रख लिया। और फिर उस हालत में पहुँच गयी जब आप और आपकी माँ मुझे अपनी पनाह में ले आये। और मैं मनचलों से बचने के लिए आपकी माँ को पहचानते हुए भी आपके घर आ गयी।

उसकी आँखों से बहते हुए नमकीन पानी ने मेरे पाँव को गीला कर दिया था। मुझे चुप देख कर वो कमरे में गयी, जब वापस आई तो उसके हाथ में एक बैग था। मेरे पास रुक कर बोली– ऋषि,मैं तन ढ़कने के लिए आपके दिए कुछ कपड़े लेकर कर जा रही हूँ। मैं अब भी खामोश रहा।

वो धीमे–धीमे चल कर दरवाज़े पर पहुँच गयी थी दरवाज़ा खोल पर वो बाहर न निकली मैंने नज़रे उठा कर देखा तो दरवाज़े के उस तरफ माँ खड़ी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थी।

माँ को देख कर मैं उठ कर खड़ा हो गया। मेरी तरफ देखते हुए माँ ने अस्मिता से कहा– कहाँ जा रही हो अस्मिता?

उसने कोई जवाब नहीं दिया। माँ ने अंदर आकर दरवाज़ा बंद कर दिया। अस्मिता को मेरे बगल में सोफे पर बैठाते हुए वो बोली– मैं तुम्हें उसी दिन पहचान गयी थी बेटी जिस दिन तुम मुझे मिली थी। मैं तुम्हें घर लायी ही इसलिए थी की तुम यहाँ रह सको।

नहीं माँ मेरा अतीत बहुत घिनौना है वो मुझे यहाँ रहने नहीं देगा।

देखो अस्मिता जो अतीत से सीख लेकर सुधर जाते हैं उनका वर्तमान और भविष्य दोनों सुधर जाते हैं। मुझे उम्मीद है तुम अपना अतीत भुला कर आगे कदम बढ़ाओगी, माँ ने अस्मिता को समझाते हुए कहा।

इतना कह कर माँ उठकर अपने कमरे में चल दी, फिर रुक कर बोली – मुझे लगता है तुमने अपना अतीत ऋषि को बता दिया होगा, अगर वो इजाजत दे तो मेरे लिए चाय बना कर ले आना।

इतना कह कर माँ अपने कमरे में चली गयी।

अस्मिता खड़ी थी, मैंने उठ कर उसकी तरफ अपनी दोनों बांहे फैला दी और वो अतीत से भविष्य की तरफ भागती हुई मेरी बांहों में समा गयी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आग

छोटू चाय की केतली और प्लास्टिक का गिलास लिए लॉज की पहली मंजिल के कमरा नंबर १०२ का दरवाज़ा खटखटाता है। दरवाज़ा खटखटाने के समय वो अपने दूसरे हाथ की छोटी सी बाल्टी को लॉज के कोरिडोर के सीमेन्ट उखड़े फर्श पर रख देता है। बाल्टी में कोयले की आग के सात-आठ टुकड़े दहक रहे हैं।

दो-तीन बार दरवाज़ा खटखटाने पर नवेद आँखें मलते हुए चिटखनी खोलता है। उसका साथी बाबर अब तक बिस्तर में दुबका है। छोटू के सर पर एक हल्की सी चपत लगा कर नवेद कहता है, क्या रे छोटू तू रोज़ सुबह की नींद खराब कर देता है।

छोटू कमरे के अंदर आ कर छोटे प्लास्टिक के गिलास में चाय उड़ेल देता है और बाल्टी से कोयले की आग टूटी फर्श पर पाँच-छह ईट रखकर बनाई गयी दोहरे फर्श पर उड़ेलते हुए बोलता है- कितना सोते हैं आप लोग एक मैं हूँ जो सवेरे पाँच बजे हाजिरी लगता हूँ गुप्ता की दूकान पर।

गुप्ता की दुकान लॉज के नीचे सड़क की दूसरी तरफ है, और वहीं नाश्ते के लिए जलेबी और समोसे भी उपलब्ध रहते है।

हाथ में चाय का गिलास लिए हुए नवेद कोयले की आग के पास बैठते हुए बाबर को आवाज़ देता है, बाबर कुनमुना कर वापस करवट लेकर शाँत हो जाता है।

छोटू कमरे से निकलते हुए कहता है बहुत ठंड़ है बाहर, मन करता है की आग के पास ही बैठे रहो।

'आग'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'अरे हम तो आग से खेलते हैं' एक युवक कमरे में घुसते हुए बोलता है। दरवाज़े पर उसकी टक्कर से छोटू थोड़ा लड़खड़ा जाता है

'एक तो जाड़े से बचाने का जुगाड़ करो ऊपर से धक्के खाओ' बुदबुदाते हुए छोटू चला जाता है।

आओ इरफ़ान हमें तुम्हारा ही इंतज़ार था। युवक को देख कर नवेद कहता है।

'इरफ़ान' नाम सुन कर बाबर बिस्तर से उठ कर बैठ जाता है।

'क्या कह रहा है इरफ़ान' – बाबर उसके नज़दीक आकर बोला

हमें वापस बुलाया है।

पर क्यों? हम क्यों इतने दिनों से यहाँ दुबके थे। बाबर के लहजे में थोडा तंज भर गया था।

उसे शाँत करते हुए नवेद इरफ़ान से बोल– इरफ़ान देख, जेहादी हम भी है और जिसकी रेकी इतने दिन से हम कर रहे थे उसे करने का हक हमारा ही है।

देखो भाईजान का हुक्म है तुम दोनों फ़ौरन से पेश्तर सब इत्तेला मुझे देकर कुछ दिनों के लिए अंडरग्राउंड हो जाओ। तुम लोगों ने जो यहाँ मेलजोल बढ़ा रखा है उसकी सब खबर उस्ताद भाईजान के पास है।

क्या मेल–जोल बढ़ाया है हमने, अरे! आम बाशिंदों की तरह रहने की कोशिश की है हमने। बाबर का लहजा अब भी तंज भरा था।

हाँ ये तो मैं देख ही रहा हूँ, कैसे एक चाय देने वाला लड़का कमरे में खाला के लड़के की तरह घुस आता है और वो नवेद जो तुम गुप्ता टी–स्टाल पर लौंडिया से जी खोल के गुफ्तगू करते हो, जानते भी हो वो लोकल न्यूज़ पेपर से वाबस्ता है। अब इरफ़ान ने तंजिया लहजे में बात मुक्कमल की थी।

नवेद ने कुछ कहने के लिए मुँह खोल ही था की इरफ़ान ने दायें हाथ की ऊँगली दिखाते हुए कहा बस भाईजान का हुक्म तामील करो। वैसे भी तुम सब अभी आग से खेलने के काबिल नहीं हो।

उसके बाद कमरे में तीनो शाँत हो जाते है।

दोपहर से ही तीनों आज मार्केट की चहल–कदमी कर रहे है नवेद और बाबर ने अपने लिए कुछ कपड़े ख़रीदे है। इरफ़ान ने यह कह कर लेने से मना कर दिया, वो टारगेट को हिट करने के बाद ही लेगा। नवेद और बाबर ने तो दुकान से खरीदने के बाद ही जैकेट पहन लिया है जैकेट तो इरफ़ान ने भी पहना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है लेकिन वो पुराना है। इरफ़ान बोलता है काम के बाद उसे इतनी दौलत मिलने वाली है जिससे वो पूरे गाँव को जैकेट खरीदकर पहना सकता है।

तीनों टहलते हुए गुप्ता टी-स्टाल तक आ जाते है। बाबर तीन चाय का आर्डर देता है। छोटू आकर नवेद से कहता है क्यूँ भाई आज पारे वाली मैडम से नहीं मिले?

पारे वाली मैडम? इरफ़ान सवाल करता है।

अरे वो नन्दिनी की बात कर रहा है। पिछले एक हफ्ते से नन्दिनी बोलती रहती है न देखो पारा गिर रहा है। बस ये छोटू उसे पारे वाली मैडम कहने लगा है।

नन्दिनी ! अच्छा वही न्यूज़ पेपर वाली। इरफ़ान सोचपूर्ण मुद्रा में बोलता है।

तभी छोटू नारा सा लगाता है लो आ गयी पारे वाली मैडम।

तीनों एक साथ पलट कर देखते है। नन्दिनी स्कूटी दुकान के सामने रोकती है। और उतर कर नवेद से बात करने लगती है वो बाबर से भी हाय-हैल्लो करती है पर अनजान होने की वजह से इरफ़ान पर कोई तवज्जोह नहीं देती है। इरफ़ान ने भी ताकीद करके रखी है कि उसका किसी से भी परिचय न कराया जाये।

इरफ़ान चाय पीते हुए नन्दिनी की तरफ बार-बार देख लेता है। उसके मन में नवेद के लिए ईर्ष्या पैदा हो जाती है। उसके मन में ख़याल आता है, अगर उसको दीन के काम के लिए हम तीनों में अव्वल करार दिया गया तो ये लड़की भी उसी को मिलनी चाहिए। आखिर भाईजान ने कहा था, जेहादियों के क़दमों में ज़मीन पर खूबसूरत दोशीजाएँ और जन्नत मैं हूरें बिछी रहती है। फिर नन्दिनी उसकी है। इरफ़ान मन ही मन सोचता है टारगेट हिट होने के बाद वो नंदिनी को प्रपोज करेगा और अगर उसने इनकार किया तो उस सूरत में वो नन्दिनी को अगवा कर लेगा और जबरन निकाह करेगा। उसका जेहादी मजहब उसे इसकी इजाज़त देता है, फिर वो ऐसा क्यूँ न करे।

उस वक़्त इरफ़ान के होंठों पर धूर्त हँसी तैर गयी। और जब नन्दिनी जा रही थी तब भी वो उसे एक्स-रे वाली नज़रों से घूर रहा था।

सच में पारा बहुत तेज़ी से लुढ़क चला था। पर इरफ़ान को तो एक ही जूनून था जेहाद। नवेद और बाबर से मार्केट का पूरा नक्शा समझने के बाद इरफ़ान उन दोनों को वहाँ से रुखसत होने की हिदायत देता है। साथ ही ताकीद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करता है फिर वो मुड़ कर इस शहर न आयें।

जाते हुए बाबर और नवेद को पीछे से आवाज़ देता है– नवेद कभी मेरे गाँव आना वहाँ तुझे नन्दिनी मिलेगी, नादिरा के नाम से मेरी बीवी के रूप में। ऐसी चार्मिंग और सेक्सी लड़की एक जेहादी की तकदीर में ही होगी।

– नवेद कुछ बोल नहीं पाता है, बस घूर कर रह जाता है, जनता है ये तो जेहादी का वसूल है काफ़िर लड़कियों को उठा कर अपने हरम में डालना। सो इरफ़ान की इस बात के विरोध का अर्थ है सरे मैदान सर में गोली खा कर मौत की भयानक सजा।

पहले मकसद में इरफ़ान कामयाब हो चुका है, शहर के मेन मार्केट में उसने बारूद वाली आग का इंतज़ाम कर दिया है। अब उसे यहाँ से पच्चीस किमी दूर कस्बे के सबसे भीड़ वाले इलाके में यही इंतज़ाम दोहराना है। एक ही वक्त दो भीड़ भरी जगह और एक साथ तबाही का मंजर। यक़ीनन इस तबाही के आलम में वो नन्दिनी को अगवा कर सकता है इसके लिए उसने अपने जेहादी कजिन को बुलवा लिया है। इधर तड़पते, चीखते लोग और उधर वो नन्दिनी के गुदाज बदन के हर पेंच को टाईट और ढीला करता हुआ। सोच कर इरफ़ान के चेहरे पर वासना की मुस्कान हावी हो जाती है और वो अपनी अगली मंजिल पर पहुँचने के लिए बाइक स्टार्ट कर देता है।

कुछ किमी चलने के बाद ही इरफ़ान को लगता है, सच में पारा बहुत लुढ़क गया है, बर्फ जमने की हद तक। लेदर के ग्लब्स में उँगलियाँ कैद होने के बाद भी वो क्लच पकड़ने से इनकार करने लगी हैं। ठंडी, शीत हवा जैकेट के अस्तर को चीरती हुई सीने की हड्डियों को बर्फ कर देने पर अमादा होने लगी। बाइक चलाते हुए घड़ी पर नज़र डाल के इरफ़ान को लगता है अभी वक्त है और वो एक चाय पीकर इस शीत लहर से मुकाबला कर सकता है। सड़क के किनारे लगे ढाबे पर उसकी बाइक के पहिये ब्रेक के गिरफ्त में आते हैं।

नवेद का नन्दिनी से उसका रिश्ता कुछ ऐसा तो नहीं है जिसके लिए उसको इतना सोचना पड़े, मगर वो मासूम है, हमारी दरिन्दगी से नावाकिफ। नवेद गहरे असमंजस में फँस जाता है। एक तरफ अल्लाह की राह में जेहादी बनने का रुतबा और दूसरी तरफ मासूम नन्दिनी जिसकी अभी पत्रकारिता की पढ़ाई भी पूरी नहीं हुई हैं नवेद अच्छी तरह से वाकिफ है कि इरफ़ान जो सोचता है वो करता है। तो क्या नन्दिनी की बाकि उम्र दरिंदो के हवस की दोजख में जलेगी। नहीं, हरगिज नहीं। अचानक नवेद फैसला करता है, अल्लाह की राह वही है जिसमें किसी की जानो–अस्मत बचाई जा सके। फिर चाहे उसका सर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके अपने ही कलम कर दें।

नवेद तेज़ी से गुप्ता टी-स्टाल की तरफ बढ़ता है, नन्दिनी का पता अब उसे छोटू ही दे सकता है। बाबर को वो जाने को बोलता है। बाबर के सवाल पर वो कहता है वो एक घंटे में सच्चा जेहाद कर के आ रहा है।

इरफ़ान ताबड़तोड़ दो चाय पीता है। चाय पीते वक़्त इरफ़ान के हाँथ ठण्ड से बार-बार कॉप जाते है। शीशे का गिलास वो पास की लकड़ी की टेबल पर रखता है फिर बाइक की तरफ बढ़ता है।

तभी ढाबे का बूढ़ा मालिक कहता है- अरे बेटा पाला गिर रहा है जरा आग सेंक कर जाओ।

'आग' ऊँह इरफ़ान मन ही मन कहता है आग तो तुम सब सेंकोगे, जलोगे आग में, मेरी फैलाई आग में। प्रत्यक्ष बिना कुछ बोले वो बाइक स्टार्ट करके निकल जाता है।

ठंडी हवा का कहर बढ़ चलता है। इरफ़ान की बाइक अब कस्बे जाने वाली शार्टकट रस्ते पर है। कच्चा रास्ता, नहर के किनारे-किनारे। इस रास्ते पर पुलिस की चौकसी का भी कोई खतरा नहीं। ठण्ड का असर अब इरफ़ान पर नज़र आता है।होंठों का रंग नीला होने लगा है। आँखों की पलकों और भवों पर पानी की छोटी-छोटी बूँदे इकठ्ठा हो चली है।

नहर पर सिंचाई के लिए बने डैम पर कुछ गाँव वाले मछली पकड़ रहे है। इरफ़ान के जेब में माचिस है, इस उम्मीद से कि उन लोगों के पास बीडी मिल जाएगी और उससे कुछ न कुछ तो गर्मी मिलेगी, इरफ़ान बाइक रोकता है। बीडी लेने के लिए वो ज्यों ही डैम के बगल में कच्चे रास्ते से गुजरता है, पैर फिसलने से वो कमर तक नहर के पानी में चला जाता है बर्फ को शिकस्त देता ठंडा पानी।

गाँव वाले उसे खीच कर ऊपर लाते हैं। एक कहता है, आग जला दो उससे कपड़े सूख जायेंगे, दूसरा कोशिश करता है, पर व्यर्थ! पाले से भीगे पत्ते सुलग कर दम तोड़ देते है। इरफ़ान बीडी के चार-पाँच कश लेकर बाइक की तरफ बढ़ता है। गाँव वाले रोकते रहते है पर वो काँपते पैरों से बाइक स्टार्ट कर देता है।

नवेद की बात सुन कर नन्दिनी सकते में आ जाती है, शहर के मेन मार्केट में बम प्लांट है। वो तुरंत अपने वरिष्ठ संपादक को फ़ोन करती है। अगले कुछ मिनट में नन्दिनी, नवेद, संपादक, भारी पुलिस बल और बम निरोधक दस्ते के साथ मार्केट में पहुँच जाते है। मार्केट से भीड़ खाली करवाने का काम शुरू हो जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब इरफ़ान के लिए बाइक चलाना बर्दाश्त से बाहर हो जाता है। एक पेड़ के नीचे आखिर उसे रुकना पड़ता है। बाइक से उतर कर उसे लगता है कमर के नीचे का हिस्सा गायब हो गया है। पैर दिखाई तो पड़ते हैं पर उसमें शायद अब संवेदना बाकी नहीं रही है। थोड़ी हिम्मत जुटा कर वो कुछ पत्ते इकट्ठा करता है, पर पाले से भीगे पत्ते आग बनने से इनकार कर देते है।

आखिर नवेद की निशानदेही पर बम मिलता है, और बम निरोधक दस्ता उसे कामयाबी से निष्क्रिय कर देते है।

जब पुलिस नवेद को लेकर जाने लगती है तो नन्दिनी की आखों में आँसू झिलमिला पड़ते है।

माचिस की आखिरी तीली बची है। इरफ़ान का पूरा शरीर ठण्ड से सुन्न पड़ गया है, आस-पास कोई आदमी नज़र नहीं आता, इतनी ठण्ड में घर से बाहर कौन निकले।

ठण्ड से जान बचाने के लिए इरफ़ान कोशिश करके बाइक की पेट्रोल टंकी के नीचे लगी फ्यूल पाईप खोलता है और कुछ पेट्रोल टहनियों में गिरा कर काँपते हाँथ से अल्लाह का नाम ले कर माचिस की तीली जलाकर उन पर फेंकता है, भक्क से आग जल पड़ती है। इरफ़ान के चेहरे पर खुशी नाचने लगती है। तभी आग एक पतली लहर बनाते हुए बाइक की ओर बढ़ती है, इरफान की रूह कॉप जाती है, वो फ्यूल पाईप वापस लगाना भूल गया था और पेट्रोल अब भी बाईक के फ्यूल टैंक से जमीन पर गिर रहा था।

ठण्ढा सन्नाटा, डिक्की में रखे बम के धमाके से टूट जाता है। पूरी बाइक आग में तब्दील हो जाती है। और आग इरफ़ान को सेंकने लगती है, पहले ज़िंदा इरफ़ान को, फिर उसके मुर्दा गोश्त को।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिल की मंज़िल

आखिर मुझे इंजीनियरिंग में एडमिशन मिल गया था, कानपुर के एक फेमस कॉलेज में। अब्बू और अम्मी दोनों ने सख्त ताकीद की थी कि मैं हॉस्टल में न रह कर अपनी फुफ्फो के घर पर रहूँ और यूँ न चाहते हुए भी मैं अपनी फुफ्फो के घर पर रहने को मजबूर हो गया था। मेरी फुफ्फो के घर पर दो पोर्शन थे, नीचे के पोर्शन में फुफ्फो की फैमिली, मतलब वो उनके शौहर उनकी लड़की शबाना और लड़का अली, और ऊपर के पोर्शन में उनकी देवरानी और उनकी दो लड़कियाँ उरुसा और तूबा उनके शौहर का कुछ दिन पहले एक रोड एक्सीडेंट में इन्तकाल हो गया था।

मेरे रहने का इंतज़ाम मेरे फुफ्फो के पोर्शन में, मतलब नीचे किया गया था। मेरा कमरा शबाना के कमरे से लगा हुआ था, फुफ्फो ने मेरी सुविधा का ख्याल रखा था और मेरे कमरे में अलग से टीवी व सीडी प्लेयर लगवा दिया था, अब्बू ने मुझे मोटरसाईकल, दिला दी थी और यूँ मेरी इंजीनियरिंग की पढ़ाई स्टार्ट हो गयी थी।

शबाना खूब चंचल लड़की थी और उससे मैं पहले भी दो चार हो चुका था। मुझे अभी रहते हुए वहाँ दो या तीन दिन ही हुए थे कि, एक शाम वह धड़धड़ाते हुए मेरे कमरे में आ गयी और चहकते हुए बोली– हाय हैंड्सम, व्हाट आर यू डूइंग?

कब्र खोद रहा हूँ – मैं मुँह बनाते हुए बोल।

किसकी ? उसके चेहरे पर शरारत आ गयी थी

मैं भी तंजिया लहजे में बोला – अपनी

वह बोली– तुम अपना ये काम थोडा पोस्पोण्ड नहीं कर सकते ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं बोला – नहीं

तो मेरे सामने आ कर खड़ी हो गयी– और मैंने पहली बार शबाना को ध्यान से देखा था वह निहायत ही खूबसूरत थी, इस समय उसने ब्लू कलर की जींस और रेड़ कलर की टी–शर्ट पहन राखी थी– मुझे अपनी तरफ देखता पा के बोली– क्या देख रहे हो? मैं अचकचा कर बोला कुछ नहीं– हाँ बोलो तुम्हें क्या काम है– बस थोड़े मैथ के प्राब्लम्स पूछने थे।

शबाना– पी.पी.एन. कालेज में बी.एस.सी. फर्स्ट ईयर की स्टूडेंट थी।

मैं बोला ठीक है पूछो– फिर वो काफी देर तक मुझसे ट्रिग्नामेन्ट्री और डायनमिक्स पर डिस्कस करती रही। उससे बात करके मैं समझ गया था कि वह जहीन किस्म की लड़की है।

उसके बाद शबाना को जब भी टाइम मिलता वह मेरे कमरे में आ जाती और पढ़ाई के बहाने मुझसे यूँ ही दूसरी बातें किया करती थी। मैं समझ गया था कि शबाना मुझमें दिलचस्पी ले रही है पर मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था, मैं यहाँ अपनी पढ़ाई करने आया था।

बस यही सब सोच कर मैं कॉलेज से आ कर शाम को अपने कमरे में कम ही रुकता था और कोई बुक लेकर छत पर चला जाता था। छत पर जाने के लिए मुझे छोटी फुफ्फो के पोर्शन से जाना पड़ता था। यूँ तो मैं उनकी फैमली से पहले मिल चुका था, पर अबकी बार उनसे कोई बात नहीं हुई थी, वजह ये थी कि पिछले कुछ महीनों से ऊपर के पोर्शन और नीचे के पोर्शन में सख्त अनबन थी, यहाँ तक एक दूसरे के पोर्शन में आने वालों पर भी तवज्जो नहीं दी जाती थी।

खैर मुझे क्या करना था एक शाम मैं खुद सलाम कह ऊपर के पोर्शन में जा कर बैठ गया, मुझे लगा वह लोग बुरे नहीं हैं अलबत्ता मेरी फुफ्फो और शबाना अब तक न जाने कितनी बार मुझे उनकी बुराई कर चुकी थी। मैं बचपन से ही उन्हें छोटी फुफ्फो कहता था– उन्होंने मुझे चाय ला कर दी, कुछ देर पास बैठी फिर वह किसी घर के काम में बिजी हो गयीं– मैंने देखा उरुसा बेहद सलीके वाली लड़की थी, उसने घर पर भी सर को दुप्पटे से ढका हुआ था वह पी.पी.एन. कालेज में बी.एस.सी. सेकेण्ड ईयर की स्टूडेंट थी। मुझसे बात करते हुए वह अक्सर पलकें झुका लेती थी, यक़ीनन वह भी शबाना की तरह दिमागी तौर पर बेहद जहीन लड़की थी, मैं उरुसा से बात कर के ऊपर छत पर चला गया था और एप्लाइड मैकेनिक्स की बुक में उलझ गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यूँ हर शाम मैं ऊपर जाता था तो उरुसा से मेरी मुलाकात हो जाती। पर अब तक मैंने तूबा को एक बार भी नहीं देखा था, और इससे पहले भी मैंने उसे कभी नहीं देखा था। एक-दो बार मैंने उरुसा से उसके बारे में जिक्र किया था। और हर बार मुझे एक जैसा जवाब मिलता था कि वह अपनी सहेली के बर्थडे या सहेली के साथ घूमने गयी है।

खैर मेरी ख्वाहिश जल्द ही पूरी हो गयी, वह इतवार का दिन था और मेरी छुट्टी, आज मैंने घूमने का कोई प्रोग्राम नहीं बनाया था। मैंने हाथ में थर्मल इंजीनियरिंग की बुक ली और छत पर आ गया, आते वक़्त मैंने देखा उरुसा घर के कामों में व्यस्त है और बेड पर एक लड़की सर झुकाए किसी मैग्जीन के पन्ने पलट रही है, उसके बाल उसके चेहरे पर बिखरे हुए थे, इसलिए मुझे उसका चेहरा दिखाई नहीं पड़ा हाँ मैंने अंदाजा लगाया कि वह तूबा होगी।

मैं थर्मल इंजीनियरिंग में उलझा हुआ था, तभी कोई मेरे बगल में आ कर खड़ा हो गया, उसने हल्के से खाँस कर मेरा ध्यान अपनी तरफ खींचा था। मैंने उसकी तरफ देखा, तो वह मुस्कराकर बोली हाय कजिन - और इसी के साथ उसने अपना हाथ मेरी तरफ बढ़ा दिया, मैंने भी उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। मेरी तरफ देखकर बोली आपका नाम समीर है न-

मैंने इकरार में सर हिलाया

वह बोली 'मैं तूबा'

फिर उसने मेरे हाँथ से किताब ले कर एक तरफ रख दी और बोली क्या हमेशा इन्हीं किताबों मैं सर खपाते रहते हो।

मैं बोल, नहीं किताबों के अलावा भी कई जगह सर खपाना पड़ता है।

वह बोली 'जैसे'

मैं बोल जैसे नीचे शबाना और ऊपर उरुसा, और अब तो लगता है सर खपाने के लिए तीसरा आइटम भी मिल गया है

'यह तीसरा आइटम कौन है' - वह तपाक से बोली

'तूबा' - मैंने मासूमियत से जवाब दिया।

'ए!!! खबरदार जो मुझे आइटम बोला' वह मेरी तरफ ऊँगली करते हुए बोली, खुद से आकर बात की तो भाव खा रहे हो- इतना कह कर वो पलट कर चल दी, मैं उसे पीछे से तूबा-तूबा कह कर पुकारता रहा पर वह रुकी नहीं, मैंने सोचा चलो एक से तो छुटकारा मिला, पर मेरा यह ख्याल एक गलतफहमी साबित हुआ, छुटकारा तो अलग बात, मैं पहली मुलाकात में ही उसे दिल दे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बैठा हूँ यह बात मुझे उसी रात समझ में आ गयी जब मैं उसे सोच कर रात भर करवटे बदलता रहा। मैं अपने दिल के फैसले पर खुद हैरान था जो एक छोटी मुलाकात पर उस पर फ़िदा हो गया था। जबकि वो खूबसूरती में शबाना और उरुसा के मुकाबिल कहीं भी नहीं ठहरती थी और दूसरी बात स्टडी में भी वह उनके मुकाबिल फिसड्डी ही थी। फिर पता नहीं क्यूँ वह साधारण सी लड़की मेरी चाहत बन गयी थी। अगले दिन सुबह उठ कर मैं ऊपर गया, छत पर वह और उरुसा दोनों ही मौजूद थी। मुझे देखते ही वह अपने कमरे में चली गयी उरुसा मेरे लिए चाय ले आई और काफी देर तक मेरे पास खड़ी हो कर बात करती रही। मैं भी इस उम्मीद में वहाँ खड़ा रहा की शायद वह नज़र आ जाये पर ऐसा कुछ नहीं हुआ, मेरे कॉलेज जाने का टाइम हो रहा था इसलिए मैं मायूसी से नीचे आ गया।

उस दिन के बाद से वह जब भी मेरे सामने आती किसी न किसी तरह से नज़रे बचा कर निकल जाती। और मैं तड़प कर रह जाता, मुझे पहली बार किसी से मोहब्बत हुई थी और वह थी तूबा जो कानपुर विद्यामंदिर के इण्टर के सेकेंड़ ईयर क्लास की स्टूडेंट थी।

मेरी पढ़ाई ठीक से चल रही थी और मुझे अब कानपुर रास आने लगा था, शबाना मेरे करीब आने के बहाने ढूँढ़ती थी और मैं तूबा के करीब जाने के बहाने ढूँढ़ता था। एक दिन मैं जब घर आया तो फुफ्फो कंही जा रही थी वह मुझे चाय दे कर चली गयी शबाना अभी तक कॉलेज से नहीं आई थी, मैं ऐसे समय काटने की गरज से छत पर चला गया, आज शायद ऊपर भी कोई नहीं था क्यूँकि किसी के बोलने की आवाज़ नहीं आ रही थी, मैं ऐसे ही पता करने के लिए छत से उतर कर ऊपर के पोर्शन में चला गया तो देखा तूबा बैठी हुई साइलेंट मोड पर टीवी देख रही थी। मुझे सामने देख कर वह खड़ी हो गयी और बोली उरुसा अभी तक कालेज से नहीं आई है

मैंने बोलने के लिए मुँह खोला -

उससे पहले ही वह बोली- मम्मी बजार गयी हैं।

मैंने कहा, तूबा तुम्हारी पूरी फैमिली में कोई तीसरा भी है।

मेरी बात पर वह कुछ सोचते हुए बोली- ठीक है बैठ जाओ।

मैं वहीं सोफे पर बैठ गया -

वह किचन की तरफ जाते हुए बोली आप टीवी देखो मैं चाय ले कर आती हूँ-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने उसे मना किया तो वह बोली चाय उसको भी पीनी है।

उसका मूड न खराब हो इसलिए मैंने उसको नहीं रोका।

वह एक ट्रे में दो कप चाय और कुछ बिस्किट ले कर आई थी, उसने एक कप मेरी तरफ बढ़ा दिया था– चाय पीते हुए वह अचानक बोली 'समीर, शबाना के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है।'

मैं बोल– मैं ख्यालों में नहीं जीता मुझे हकीकत पसंद है।

और हकीकत क्या है वह शोखी से बोली–

हकीकत मेरे सामने है– मैंने देखा मेरी इस बात पर उसके चेहरे पर थोड़ी हया आ गयी थी– सच पूछो तो मुझको उसकी ये हया बहुत प्यारी लगी थी। वह अपनी बड़ी–बड़ी आँखें उठा कर बोली 'बड़ी बुरी हकीकत चुन रहे हैं आप' वह थोड़ी शरमा कर फिर बोली 'मेरे कहने का मतलब यह है एक तरफ शबाना और उरुसा दूसरी तरफ मैं'

उसकी इस बात का मैंने कोई जवाब नहीं दिया, बस मैं उठा उसका नाजुक हाथ अपने हाथ में लिया और बोल तूबा आप यह अभी नहीं समझोगी–

वह बोली– समीर फिर कब समझूँगी, उसका हाथ अब तक मेरे हाथ में था।

मैं बोल गुजरते वक्त के साथ सब समझ जाओगी।

अभी सिर्फ इतना बताओ क्या आप मेरे दिल की मंजिल बनोगी। और उसने जब बदले में इकरार में सर हिलाया था तो उसका चेहरा हया से लाल हो गया था और मैं तो खुशी से झूम उठा था वह मेरे बालों में ऊँगली घुमाती हुई बोली समीर आप आज से मुझे 'आप' नहीं बोलेंगे।

मैंने पूछा 'फिर क्या बोलूँ?'

वह बोली 'सिर्फ तूबा' आपको क्या मालूम आप जब मेरा नाम लेते है तो मुझे कितना अच्छा लगता है।

फिर उस दिन के बाद मेरी ज़िन्दगी खुशगवार हो गयी, मैंने अपना पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई और तूबा पर केन्द्रित कर दिया। मैं अपने कालेज से निकल कर उसके कालेज के सामने खड़ा हो जाता, वह आकर मेरी बाइक पर बैठ जाती स्काई ब्लू स्कर्ट और व्हाइट शर्ट में वह मुझे गुड़ियों की मानिन्द दिखती हम लोग साथ घूमते, रेस्टोरेंट में स्नैक्स खाते और फिर मैं उसे घर से थोड़ी दूर पहले उतार देता, यूँ हम घर अलग–अलग पहुँचते, सुबह भी मैं यही करता वह घर से बाहर मेरा इन्तज़ार करती हुई मुझको मिलती, मैं पहले उसे उसके कालेज छोड़ता फिर खुद कालेज जाता। घर पर भी हम तन्हाई में मिलने का कोई न कोई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मौका ढूँढ़ ही लेते, यूँ मेरी सुबह तूबा से शुरू होती और शाम तूबा पर ख़त्म होती। वक़्त कितना हसीन हो गया था तूबा कभी मेरे शानो पर सर रख कर यह कहती 'समीर जब से आप मिले हो तब से तो मैं पंख लगा कर आसमान में उड़ रही हूँ' और मैं प्यार से उसके रुखसार का बोसा ले लेता, वह शर्म से अपने चेहरे को अपनी हथेलियों में छुपा लेती। धीरे-धीरे तूबा में सलीका भी आने लगा था। मैं देखता कि वह बड़े दिल से घर के कामों को करने की कोशिश करती, रात को काफी देर तक पढ़ाई करती। सच मुझे उसकी इन अदाओं पर और प्यार आता।

वक़्त गुजरता रहा मेरी इंजीनियरिंग की स्टडी मुक्कमल हो गयी और गुजरते वक़्त के साथ मेरा तूबा के साथ इश्क परवान चढ़ता रहा, और तूबा, वह तो मुझे दीवानों की तरह मोहब्बत करती थी। उसने बी.ए. का इम्तिहान पास कर लिया था। उरुसा और शबाना दोनों ही एम.एस.सी. की स्टूडेंट थी। इस गुजरते वक़्त में ज्यों-ज्यों मेरा इश्क तूबा के साथ जवान हो रहा था। वैसे-वैसे उरुसा मेरी अच्छी दोस्त बनती जा रही थी दोस्ती तो मेरी शबाना से भी अच्छी खासी हो गयी थी।

मुझे लगा की सब कुछ ठीक चल रहा है और मैं अम्मीजान से तूबा के बारे बात करने ही वाला था कि मेरी तमाम ज़िन्दगी अँधेरों में घिर गयी।

उस दिन सुबह से ही मौसम बहुत खुशगवार किस्म का था, मैंने नई-नई जॉब हासिल की थी और उसके साथ ही एक मारुती ऑल्टो कार खरीद ली थी, मैं शाम से निकला और अहिस्ता-अहिस्ता गाड़ी ड्राइव करते हुए घर की तरफ चल पड़ा

मैं तूबा के बारे में ही सोच रहा था, मेरी गाड़ी विजय नगर चौराहे पर पहुँची थी, तभी दूर से मुझे तूबा खड़ी दिखाई दी, मैंने सोचा वह यहाँ पर क्या कर रही है, मुझे लगा शायद यह मेरा वहम होगा, इसलिए मैंने गौर से देखा, हाँ वह तूबा ही थी, मेरे जेहन को एक तेज़ झटका लगा था, इसलिए नहीं की वहाँ तूबा को नहीं होना चाहिए था बल्कि इसलिए की वह किसी लड़के के साथ खड़े होकर, उससे हँस-हँस के बातें कर रही थी, मैंने उससे थोड़ी दूर पर अपनी कार रोक दी थी और उसे और उस लड़के को बातें करते हुए देखने लगा था।

मैं चाहता तो उसके पास जा सकता था पर पता नहीं क्यूँ, मैं क्या सोच कर गाड़ी से नहीं उतरा, मैं अपलक उन्हें देखता रहा वह दोनों काफी देर तक बातें करते रहे, फिर रिक्शे मैं बैठ कर रावतपुर की तरफ चलदिए, मुझे लगा की लड़के ने रिक्शे में बैठने के बाद तूबा का हाथ पकड़ लिया था। अगले पल मैंने सोचा की यह मेरा वहम है खैर मैं अपना शक दूर करना चाहता था इसलिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गाड़ी को स्टार्ट किया और रावतपुर की तरफ जाने वाली सड़क की तरफ टर्न कर दिया, उस रिक्शे के बगल से मैंने गाड़ी को यूँ निकल की तूबा की मुझ पर नज़र न पड़े, मैंने देखा कि, लड़के ने यक़ीनन तूबा का हाथ पकड़ रखा था इस बार मुझे कोई धोखा नहीं हुआ था, पर क्या करूँ यह सब मैंने देखा था, मेरा दिमाग सुन्न हो चला था, नसों में बहता हुआ लहू, लग रहा था अभी जम जायेगा, मैंने देखा स्टेयरिंग पर मेरे हाँथ काँप रहे थे, ऐसा लग रहा था की मेरा दिल बैठा जा रहा है। न जाने किस तरह मैं घर पहुँचा था मुझे खुद मालूम नहीं था।

घर पहुँच कर सीधे अपने कमरे में चला गया था हलाकि फुफ्फो मुझे पुकारती रही थी पर मैंने उनकी आवाज़ पर कोई तवज्जो नहीं दी थी।

मैं कमरे में पहुँच कर सीधे अपने बेड़ पर लेट गया था यहाँ तक की मैंने अपने शूज भी नहीं उतारे थे, अपनी आखों पर मैंने अपने बाँये हाथ को मोड़ कर रख लिया था और सोचने लगा था तूबा और उसके साथ उस लड़के के बारे मैं।

न जाने कितना वक़्त इसी तरह गुजर गया होगा मुझे अंदाजा नहीं था। अचानक मुझे लगा की मेरे पैरों में कुछ हरकत हो रही है मैंने धीरे से अपनी आँख खोली, मैंने देखा शबाना मेरे जूते के तस्मे खोल रही है, मैं झटके से उठ कर बैठ गया। मैंने अपने शूज से हटाकर शबाना का हाँथ पकड़ लिया था, मैं थोडा तेज़ आवाज़ में बोल– ये क्या कर रही हैं आप ?

बदले में शबाना बिना कुछ बोले अपना हाँथ मेरे हाथों से छुड़ा कर वापस मेरे पैरों में झुक गयी और मेरे शूज के फीते खोलने लगी।

न जाने क्या हुआ था अबकी बार मैंने उसे रोक नहीं था उसने एक बार पलके उठा कर मेरी तरफ देखा, और फिर उसने मेरे दोनों पैरों से शूज और शाक्स उतार कर उन्हें शूज सेल्फ में रख कर एक तरफ खड़ी हो गयी थी, मैं उठ कर उसके पास गया और उसे उसके शानो को पकड़ कर सोफे पर बिठा दिया और खुद उसके पास बैठ गया।

मैं बोल– शबाना ये सब क्या कर रही है आप

बदले में वो सोफे से उठ क़दमों में बैठ गयी और मेरी तरफ सर उठा कर बोली समीर – मुझे अपने क़दमों, अपनी ज़िन्दगी में जगह दे दो।

मैंने शबाना की तरफ देखा और बोला, शबाना तुम हर लिहाज से अच्छी लड़की हो हर शख्स तुम्हें अपनी बीवी के रूप में पाना चाहेगा, पर मैं क्या करूँ मैं किसी और से मोहब्बत करता हूँ।

उसने अजीब सी निगाहों से देखा था, मेरे इस जुमले ने उसे पे शदीद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

असर किया था। वह काँपती आवाज़ में बोली थी– क्या मुझे उस खुशनसीब का नाम जानने का हक है।

और मैंने उसके दिल पर बिजलियाँ गिरते हुए बोला– तूबा

शबाना ने मेरे जानिब ननीदी निगाहों से देखा और फिर मुझे रूम में तन्हा छोड़ कर दरवाज़े से बाहर निकल गयी।

और मैं थका हारा सोफे पर ढेर हो गया और वापस तूबा के ख्यालों में खो गया।

वो तूबा जो और किसी लड़के के साथ मुझे दिखाई पड़ी थी। मैं यूँ ही सोफे पर न जाने कब तक बैठा रहा था चारों तरफ अँधेरा फ़ैल चुका था, और शायद मेरा दिल भी अँधेरे में डूब रहा था।

मैंने बहुत बोझिल मन से, फुफ्फो के बार–बार कहने पर डिनर किया था, मैंने देखा था डिनर करने के वक़्त शबाना की आँखों में बार–बार अश्क आ रहे थे, और वो उन्हें मेरी और फुफ्फो की नज़रे बचा कर साफ़ कर रही थी।

डिनर के बाद आज मैं ऊपर के पोर्शन में नहीं गया था न ही जानने की कोशिश की थी कि तूबा आई है या नहीं। जाकर मैं बिस्तर पर लेट गया था पर नींद वह आँखों से कोसो दूर थी, ख्यालों में थी तो सिर्फ तूबा, सारी रात मैंने आँखों में गुजारी।

सवेरा हो चुका था चारों और उजाला फ़ैल रहा था, पर मुझे महसूस हो रहा था की अब मेरे लिए चारों तरफ सिर्फ अँधेरा है।

नाश्ता करने के बाद मैं बोझिल मन से दफ्तर के लिए निकल पड़ा था, मैंने महसूस किया कि दो आँखे मेरा पीछा कर रही थी, यक़ीनन वह आँखे शबाना की थी।

मैं गाड़ी लेकर सड़क पर आ गया था, आगे यू–टर्न पर मैंने देखा तूबा खड़ी है, मैंने गाड़ी रोक दी और वह डोर खोल कर बैठ गयी।

मैंने देखा उसके चेहरे पर वही मासूमियत, वही मुस्कान खेल रही थी, पर मैं खामोश था, मुक्कमल खामोश। थोड़ी देर बाद वह बोली, क्या हुआ समीर आज बहुत चुप हो, और मैं गाड़ी का गियर बदलते हुए उसके चेहरे के जानिब देखते हुए पुछा, कल क्या–क्या किया अपने?

बस कुछ नहीं पूरे दिन कालेज में थी, कल सारे पीरियड़ अटेंड़ किये मैंने, वह बड़ी मासूमियत से बोली थी।

मुझे शदीद झटका लगा उसकी ये बात सुन कर, एक बार मैंने सोचा तूबा सच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बोल रही है मैंने जरूर कल कोई गलती की है, पर ऐसा कैसे हो सकता था, यकिनन मैंने कल कोई धोखा नहीं खाया था, मैंने किसी लड़के के साथ तूबा को ही देखा था, पर तूबा बड़ी सफाई से झूठ बोल रही थी।

खैर मैं अपने सब्र का इम्तिहान देने को तैयार था इसलिए कल का कोई जिक्र करना मैंने बेहतर नहीं समझा, और उसे उसके कालेज के सामने ड्राप करके खुद ऑफिस चला गया।

आज फिर तूबा मुझे उसी लड़के के साथ नज़र आई थी, जगह थी माल रोड़, दोनों हीर पैलेस के सामने खड़े थे, पिछले वाकये को अभी चार-पाँच दिन ही गुजरे थे और ये नया हादसा मेरे आँखों के सामने था। आज मैं यूँ ही ऑफिस से लंच के बाद निक़ल आया था और युनिवर्सल बुक स्टाल में एक बुक लेने के लिए गया था, और हीर पैलेस के आगे उन दोनों को देख लिया था।

मैं कुछ देर शाक्ड कंडिशन में गाड़ी में बैठा रहा, वो आपस में हँस-हँस के बात कर रहे थे पहले मैंने सोचा की मैं गाड़ी से उतर कर उनके पास चला जाऊँ, फिर न जाने क्या सोच कर मैं गाड़ी में ही बैठ कर उन दोनों को देखता रहा।

शायद मूवी स्टार्ट होने का टाइम हो रहा था इसलिए वो दोनों थिएटर के अंदर चले गए थे।

मैं कुछ देर यूँ ही गाड़ी में बैठा रहा, मुझे लग रहा था जैसे मेरा दिमाग सुन्न हो गया हो, मैं कुछ भी सोच नहीं पा रहा था। मैं क्या करूँ, क्या न करूँ न जाने कैसी वहशत मुझ पर हावी होती जा रही थी, न जाने किन ख्यालों में मैंने गाड़ी को वापस घर की तरफ दौड़ा दिया था, घर पहुँच कर भी मुझे सुकून हाँसिल नहीं हुआ था। मैं टीवी देखते हुए भी बस तूबा और उस लड़के के बारे में सोच रहा था, मुझे लग रहा था मेरी ज़िन्दगी जहन्नुम होती जा रही है।

शाम के पाँच बजे के आस-पास तूबा घर में दाखिल हुई थी, वैसे ही इठलाती हुई मुस्कराती हुई, आज न जाने क्यूँ मुझे उसकी मुस्कान ज़हर से भीगी हुई लग रही थी। मेरी तरफ एक मुस्कार बिखेर कर वह ऊपर के जानिब चली गयी थी, मुझे मालूम था इस वक्त ऊपर कोई नहीं है बस इसलिए मैं भी भाग कर उसके पीछे ऊपर पहुँच गया था, मैंने उसका हाथ पकड़ कर उसे अपनी तरफ खींचते हुए बोला कहाँ थी तुम-

वह अदा से मुस्कराती हुई बोली कहाँ थी मतलब? कालेज में थी और कहाँ

मेरा सब्र जवाब दे गया था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने कहा, मैं कालेज गया था तुम्हारे तुम्हारी फ्रेंड़ रेखा मिली थी- उसने कहा तुम कहीं घूमने गयी हो

मेरी बात सुन कर उसका चेहरा थोडा उतर गया था, पर वह बड़ी ही घाघ लड़की थी उसने तुरंत ही खुद को सम्भाल लिया था, चेहरे पर मुस्कान बिखेरते हुए बोली-

ओह समीर आप मुझसे ज्यादा रेखा पर यकीन कब से करने लगे, फिर वह बायीं आँख दबा कर बोली कही उससे कोई चक्कर-वक्कर तो चालू नहीं हो गया आपका !

और मैं, मेरा सब्र जवाब दे गया था मेरा हाथ हवा में लहराया और तड़ाक की आवाज़ के साथ तूबा के गाल से टकराया मेरा थप्पड़ इतना तेज़ था की वह खुद को सँभाल न सकी और लहराते हुए पास में पड़े सोफे पर जा गिरी, सिर्फ कुछ पल, हाँ कुछ पल ही शान्ति के थे, फिर वो तड़प कर उठ के सोफे पर बैठ गयी और मेरे तरफ जलती हुई नगहों से देखते हुए बोली मिस्टर समीर, आप हदें पार कर रहे है आपको मुझे मारने का कोई हक नहीं है और हाँ आज मैं कालेज में नहीं थी, घूमने गयी थी और सुनो मुझे कंही आने-जाने या घूमने के लिए आपसे इजाज़त लेने की जरुरत नहीं है। न ही मुझसे पूछने का हक आप रखते है।

और फिर वो बेझिझक अपने और अपने उस प्रेमी साजिर के किस्से सुना रही थी, उसका हर लफ्ज़ पिघलते शीशे की तरह उतरता जा रहा था मेरे कानों में, उसका हर जुमला मेरे दिलो दिमाग पर चला रहा था, अश्कों की बूँदें मेरे आखों के कोनो में इकट्ठी हो चुकी थी- हाँ आज मैंने कोशिश की थी कि वो ढलक कर आँखों से बाहर न आ जाएँ, हाँ मैं खुद को एक बेवफा के आगे कमजोर नहीं करना चाहता था।

फिर वो नागिन की मानिन्द फुँफकारती हुई बोली अब मुझे तन्हा छोड़ दो समीर और यहाँ से निकल जाओ। और हाँ जब तक ज़िन्दगी रहे खुद अपनी सूरत मुझे मत दिखाना

और मैं पलट कर थके क़दमों से दरवाज़े की तरफ बढ़ चला, अभी मैं दरवाज़े पर पहुँचा था की उसकी आवाज़ वापस कटार की तरह सुनाई दी- वो बोली- समीर, एक बात और मैंने तुमसे कभी प्यार नहीं किया हमारे बीच जो भी था वो शायद आकर्षण से ज्यादा न था।

मैंने उसकी बात बिना पलटे सुनी और फिर तेज़ क़दमों से वहाँ से निकल कर आ गया अपने कमरे में, मैं सोफे पर इस तरह से बैठ गया जैसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सैकड़ों सालों से बीमार हूँ। मेरे सोचने की ताकत ख़त्म हो गयी थी, आँसुओं को मैंने जब्त करके रखा हुआ था, मैंने खुद को इस वक़्त ग़मों के अन्धकार में पाया था, जिसका सब कुछ लुट गया हो, बर्बाद हो गया हो।

हाँ अगले कई दिन ग़मों से सराबोर थे मेरे ज़िन्दगी में पहली बार मेरा दिल टूटा था और वो भी इस तरह और वो भी उसके हाथों जो सारी कायनात में मुझे सबसे ज्यादा अजीज था, हाँ उस दिन के बाद फिर मैं कभी तूबा के सामने खुद नहीं गया, जो कभी वो मेरे सामने पड़ भी गयी तो मैंने नज़रे झुका ली खुद उसने भी कभी मुझसे बात नहीं की।

और फिर तूबा मेरे साथ-साथ, अपनी अम्मी और बड़ी बहन उरुसा पर बिजलियाँ गिरती हुई अपने बॉयफ्रेंड़ साजिर के साथ भाग कर शादी कर ली थी।

छोटी फुफ्फो ने इसे अपना मुकद्दर मान कर घर में फिर कभी उसका ज़िक्र करने से मना कर दिया और फिर मेरी फुफ्फो ने सारे गिले शिकवे मिटा कर उरुसा को अली की दुल्हन बना कर ऊपर के पोर्शन से नीचे के पोर्शन में ले आयी।

मुझे और मेरे दर्द को अगर कोई समझ सकता था तो वो थी शबाना जो मेरी हालत देख सारी-सारी रात आँसू बहाया करती थी और मेरी मोहब्बत में तड़पा करती थी।

फिर एक दिन मेरे अम्मी-अब्बू फुफ्फो के घर आये, मेरे लिए शबाना का रिश्ता माँगने, जिसे फुफ्फो ने खुशी से कबूल कर लिया था। मेरी ख़ामोशी को मेरी अम्मी ने मेरी रजामंदी समझा।

उस रात न जाने कौन से पहर, शबाना मेरे कमरे में आकर बोली- समीर, आप चाहें तो मेरा रिश्ता ठुकरा सकते हैं, मैं जानती हूँ मैं कभी आपके दिल में तूबा की जगह नहीं ले सकती, मैं आपको कभी खुश नहीं रख सकती। पर यह बात भी सच है समीर मैं आपसे बेपनाह मोहब्बत करती हूँ और यकीन जानो मैं तो आपसे इश्क करती रहूँगी, आप मुझे मिलो न मिलो, आप मुझसे मोहब्बत करो न करो, पर मैं अपने इसी इश्क के सहारे अपनी ज़िन्दगी गुजार दूँगी।

और न जाने कौन सी भावना थी कि मैंने आगे बढ़ कर पागलों की तरह उसे अपने गले से भींच लिया था और वो मेरे सीने में खुद को छुपाने की कोशिश करने लगी थी, और मैं प्यार से उसके बालों को सहलाने लगा था और शायद यही मेरी मुहब्बत का इज़हार था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और फिर मैंने कानपुर छोड़ दिया, मुंबई में जॉब हासिल किया और शबाना को दुल्हन बना कर अपने घर ले आया, शबाना हर लिहाज़ से अच्छी बीवी साबित हुई, उन्होंने प्यार से मेरी ज़िन्दगी सराबोर कर दी, मुझे राबिया जैसी खूबसूरत बच्ची दी, सच ज़िन्दगी हर जानिब से खुशगवार हो गयी।

पर अभी एक तूफ़ान मेरी ज़न्दगी में आना बाकी था, मेरी मेहनत और शबाना की दुवाएँ रंग लायी थीं, मैंने खुद की एक छोटी सी फैक्ट्री चालू कर ली थी। एक दिन मैं ऑफिस की फाइलें देख रहा था तभी मेरे मैनेजर ने मुझसे आ कर कहा- सर आपने जो पी.ए. के लिए एडवरटाइज किया था उसके लिए एक लड़की का इन्टरव्यू लिया था मैंने।

मैं बोला- अहमद अगर तुम्हें वह इस पोस्ट के लिए सूटेबल लगती है तो रख लो

वह बोल जी सर- वह है तो सूटेबल पर मैं चाहता हूँ एक बार आप उसका इन्टरव्यू ले ले। वो इस समय बाहर बैठी है।

मैं कुछ सोचते हुए बोला ठीक है उसे अंदर भेज दो-

मैं कुछ थकान की वजह से कुर्सी की पुश्त से सर टिका कर बैठ गया था और मैंने अपनी आँखे बंद कर ली थी।

मुझे आवाज़ सुनाई पड़ी- मे आई कम इन सर।

न जाने क्यूँ मुझे लगा की ये आवाज़ मैंने हजारों बार सुनी है- मैं आँखे बंद किये हुए बोल- यस

मैंने क़दमों की आहट को करीब आते हुए सुना- आँखों के ऊपर रखा हाँथ हटाया और आँखे खोली, सामने जो लड़की खड़ी थी उसे देख कर मेरे दिमाग को एक शदीद झटका लगा- यक़ीनन वो तूबा थी, मेरा अतीत मेरे सामने खड़ा था।

मेरे चेहरे पर नज़र पड़ते ही उसने नज़रे झुका ली थी, लरज़ती आवाज़ में वो बोली- सॉरी समीर मुझे पता न था यहाँ पर आप मिलेंगे, इतना बोल कर वो पलट कर चल दी थी, वो दरवाज़े तक ही पहुँची थी- मैंने उसे आवाज़ दी तूबा- इन्टरव्यू देकर जाइये, न जाने क्या था मेरी आवाज़ में कि वह वापस आकर मेरे सामने खड़ी हो गयी थी। मैंने उसे बैठने के लिए बोला तो वह थैंक्स कहते हुए मेरे सामने पड़ी चेयर पर बैठ गयी थी।

उसने फाइल मेरी तरफ बढ़ा दी थी, उसकी फाइल देखते हुए मैंने उससे दो-तीन सवाल पूछे थे, जिनके जवाब में वो चुप ही रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने फाइल बंद करते हुए कहा- एक पर्सनल सवाल पूछ सकता हूँ

वो बोली- जी पूछिए

मैंने कहा मिसेज तूबा साजिर को यूँ नौकरी की क्या जरुरत पड़ गयी ?

मेरी निगाहें उसके चेहरे पर जमी हुई थी।

वो आँखे झुकाते हुए बोली अब मैं मिसेज तूबा साजिर नहीं रही।

मैं तुरंत कुछ बोल नहीं सका, कुछ पलों तक सर झुकाए बैठी तूबा को देखता रहा- फिर मैंने कहा मैं कुछ समझा नहीं !

बदले में वो वैसे ही सर झुकाए बोली आप तो बचपन से ही शार्प माइंडेड़ है, फिर भी नहीं समझे

मैं हँसते हुए बोल मेरी जहानत दुनियावी मामलों मैं कमजोर है मैडम, यह आपको बताने की जरुरत नहीं, मेरे इस जुमले ने शायद उसे कचोटा था, तभी तो उसने सर उठा कर मेरे जानिब देखा था।

न जाने क्यूँ उसके चेहरे पर तड़प देख कर मुझे अच्छा लगा था, पर अगले ही पल मेरे मन ने मुझे धिक्कारा था, आखिर वो मेरी मोहब्बत थी, किसी ज़माने में।

मैं अपने लहजे को नर्म करते हुए बोला था- तूबा, अगर आप कुछ बताना चाहें तो मुझे बता सकती है, और तूबा ने लरज़ती आवाज़ में जो बताया वो सुन के मैं सकते में आ गया।

तूबा मुझे ठुकरा तो चुकी थी दौलतमंद साजिर की वजह से, पर शादी के कुछ दिन बाद ही साजिर ने अपने रंग दिखने शुरू कर दिए थे, वो ऐसा लड़का नहीं था जो एक औरत के पल्लू से बँध कर रहता, आखिर वही हुआ, साजिर एक दिन सामया को अपनी दुल्हन बना कर अपने घर ले आया और सामया ने तूबा को घर से बाहर का रास्ता दिखा दिया, वह अपने घर भी न जा सकी और यूँ एक गर्ल्स हास्टल में रह कर जॉब की तलाश में लग गयी।

खैर मैंने उसकी फाइल यह कहते हुए रख ली, कि मैं उसे जॉब के बारे में बाद में इन्फॉर्म कर दूंगा और तूबा उठ कर चली गयी।

घर पहुँच कर मैंने चाय पीते हुए सारा वाकया शबाना को बताया, वो बड़े गौर से मेरी बात सुनती रही, फिर मेरे बालों को सहलाते हुए बोली- आप उस बेचारी को नौकरी दे ही दो।

मैंने शबाना के चेहरे के जानिब देखते हुए पुछा, ये जानते हुए भी की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वो मेरी पहली मोहब्बत थी तुम उसे मेरे पास आने देना चाहती हो और शबाना ने मेरा चेहरा अपने कोमल हथेलियों के बीच लेती हुई बोली – समीर अब आप मेरे शौहर है और मुझे अपने शौहर पर पूरा यकीन है।

मैंने कहा पर शबाना उसने जो किया उसके बाद ये सब ....

और शबाना मेरी बात काटते हुए बोली उसकी सजा उसे खुदा दे चुका है, आप तो उसे बस एक जॉब दे दें।

और मैं ताकने लगा वो पाक चेहरा, जहाँ दया, प्यार, मोहब्बत और गैरों के लिए दर्द समाया था, हाँ यक़ीनन शबाना ही थी मेरी दिल की मंजिल और मैंने तड़प कर अपने दिल की मंजिल की गोद में सर छुपा लिया और वह अपने हाथों से मेरा सर सहलाने लगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कल्याणी का कोप

जसिरापुर और नसिरापुर दो गाँव. इन दोनों गाँव को विभाजित करके बहती हुई कल्याणी नदी. रात को जब इन गाँव में बसे लोग दिन में खेत में किये गए हाड़तोड़ मेहनत की थकान खटिया पर लेट कर दूर करते उस समय कल्याणी की बहती धरा के कल-कल की ध्वनि उन थके-हारों किसानो पर टॉनिक का असर करती.

कहते हैं बहुत पहले इन गाँव में हरियाली का कोई निशान तक नहीं था. तब इन दोनों गाँव की सरहद आपस में जोड़ती थी. और इन्हें विभाजित करने के लिए तब यहाँ कल्याणी की धारा नहीं बहती थी. दूर-दूर तक ऊसर बंजर ज़मीन. फसल का नामोनिशान नहीं. फसल तो दूर, पशुओं को चरने के लिए घास तक का अकाल. सो दोनो गाँव के निवासी जीवन-भरण के लिए किसी दूसरे गाँव में जाते और वहाँ के ज़मादारों और बड़े किसानों के खेतों में मजदूरी करते और इतनी हाड़तोड़ मेहनत के बाद भी कभी-कभी दो वक़्त की रोटी न जुटा पाते.

पर आज हालात अलग हैं गाँव का सीना चीर कर उसे दो भागो में बाँट कर बहती कल्याणी नदी ने ऊसर खेतों को हरा-भरा कर दिया. साथ ही गाँव के बाशिंदों का जीवन भी.

पर पता नहीं कभी-कभी कल्याणी का मिजाज़ कैसे बदल जाता और वो कल-कल की जगह हर-हर की ध्वनि से बहने लगती है और खेतों में उगी फसल के साथ साथ गाँव के तमाम घर भी बहा ले जाती और पीछे छोड़ जाती न सुना सकने वाला तबाही का मंज़र. कहते हैं अब तक के अपने इतिहास में कल्याणी ने एसा उपद्रव कोई दो-तीन बार ही मचाया है.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोगो से सुना वो इसी अविभाजित गाँव की थी. पर आजकल उसका इन दोनों गाँव की सीमा के अन्दर प्रवेश बमुश्किल होता है. बेचारी को गाँव के आस-पास देख कर ही लोग ढोर-पशु की तरह खदेड़ देते हैं. बच्चे भी उस पर माटी के ढेले फेंक कर ताली बजा कर हँसते हैं. बेचारी की उम्र होगी पैंसठ-सत्तर के आसपास. ज़र्ज़र काय, सफ़ेद सुतली की तरह बाल, कोटर में धँसीं आँखें और लाठी के सहारे चलता कमर से झुका बदन. उसे दोनों गाँव के लोगो ने पगलिया की संज्ञा दे रखी थी.

आज न जाने वो कैसे नसिरापुर गाँव में घुसने में सफल हो गई और 'कल्याणी गरजेगी' का नारा बुलंद करके गाँव के चौपालों और गलियों के चक्कर काटने लगी. समय था सुबह का नौ-दस का और तमाम मर्द थे खेतों पर. सो बुढ़िया को गाँव में हो-हल्ला मचाने का अवसर मिल गया.

थकी हुई वो एक नीम के पेड़ के नीचे सुस्ता रही थी. तभी उस पार खेत से घर के मर्दों को खाना देकर लौटती दो लड़कियों की नज़र उस पर पड़ी. दोनों ही अल्हड़, दोनों का खिलता यौवन, एक का नाम लाली तो दूसरी का मिताली.

दोनों ही बुढ़िया के आस-पास बैठ गईं. उन दोनों पर एक नज़र ड़ाल कर बुढ़िया फिर बुदबुदाई 'कल्याणी गरजेगी'.

दोनों ने सुना. दोनों ही कोमल मन की थी, दिल में दया भाव भी. पूछा, 'कल्याणी गरजेगी' पर कैसे काकी ?

दोनों अबोध... तभी तो गरजने का अर्थ समझ नहीं सकीं. बुढ़िया लाली के गालों को सहलाते हुए बोली सँभल जा बेटी, नहीं तो कल्याणी गरज पड़ेगी.

लाली को तो कुछ समझ न आया मिताली थोड़ी समझदार थी, लोटे में बचे पानी को बुढ़िया को पिलाया फिर पूछ काकी, कल्याणी के गरजने से लाली के सँभलने का क्या अर्थ है ?

बुढ़िया बोली बेटी, संसार का तिलिस्म अजीब है, जब वो अपने सुख दाताओं को सुखी नहीं देख सकते तो बाकी की बिसात ही क्या ! मिताली कुछ और पूछती इससे पहले ही वो जर्जर काया बुढ़िया लाठी टेकते और 'कल्याणी गरजेगी' को बार-बार बुदबुदाती चली गई.

आज नसिरापुर और जसिरापुर दोनों गाँव में सन्नाटा है. पुलिस की गाड़ी आ चुकी है। लाश का पंचनामा करके पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है. तफ्तीश जारी है कुछ की गिरफ्तारियाँ भी हुई है.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जसिरापुर रहने वाले अनिल की बेदर्दी से हत्या कर दी गई है. लाश गाँव के पास के जंगल से मिली. कई दिनों से गाँव में कानाफूसी थी. जसिरापुर का अछूत लड़का अनिल और नसिरापुर की स्वर्ण लड़की लाली के बीच कुछ चल रहा है. कई लोगो ने दोनों को अकेले गन्ने के खेत में देखने का दावा भी किया था.

कल्याणी नदी पार अनिल की मौत की खबर नसिरापुर पहुँची. लाली कोठरी की धन्नी से लटकते छल्ले में दुपट्टा बाँध कर झूल गई.

शाम होते-होते बूँदा-बाँदी होने लगी और अँधेरा होते ही मूसलाधार बारिश. लोग घरों में दुबक गये. रात के न जाने कौन से पहर में कल्याणी का कोप हर-हर करके बढ़ने लगा. चारो तरफ चीख-पुकार का मंजर. सुबह होते-होते बिलकुल शान्ति. दोनों गाँव के तमाम घर कल्याणी ने लील लिए. फसलें बह गई. जानवरों का कोई पता न चला.

एक ऊँचे गाँव में भाग कर लोगो ने जान बचाई. मिताली बेचारी सदमे में थी. कल ही उसने अपने बचपन की सहेली को खोया था और आज घर. शुक्र है उसके अम्मा-बाप्पा और बूढ़ी दादी उसके साथ में थी.

मिताली के बाप्पा कुछ भोजन की तलाश में गये. मिताली अपनी माँ और दादी के बीच सहमी बैठी थी, तभी वो पगलिया प्रकट हुई. बुदबुदा रही थी - कल्याणी गरजी न. मिताली ने होठों ही होठों में कहा हाँ तुम कल सच बोलरही थी. तभी मिताली की दादी बोली -

ये तो हमेशा ही सच बोलती है.

क्या? मिताली ने सवाल किया.

दादी बोली - यही तो कल्याणी है. जो सुदर्शन से प्रीत लगा बैठी थी. घर का ही नौकर था. कल्याणी का घर ज़मीदारों का था. बेचारा सुदर्शन नहर की खुदाई में मजदूरी करता था, नदी से पानी गाँव लाने के लिये नहर बनायी जा रही थी, गाँव को हरा-भरा जो करना था.

कल्याणी जब कभी अवसर मिलता उससे बतियाती, फावड़ा चलने से सुदर्शन के हाँथ में पड़े छाले सहलाती. ये भेद न जाने कैसे ज़मींदार पे खुल गया.

जिस दिन नहर की खुदाई का काम खत्म हुआ, उसके पानी पर सुदर्शन की लाश तैर रही थी. उस लाश को देख कर कल्याणी पागल हो गई. सारे गाँव में बावली बनकर दौड़ते भागी.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसी रात नहर ने विकराल रूप रख लिया एक ही रात में वो नहर से नदी हो गई. सुबह ज़मींदार अपनी हवली सहित गायब था. बस तब से जब भी कोई प्रेमी या प्रेमिका गाँव वालो के झूठे दंभ की भेंट चढ़ते हैं, कल्याणी कोप करती है.

दादी और भी बहुत कुछ बोल रही थी पर मिताली अब कुछ सुन नहीं पा रही थी. बस टुकुर-टुकुर जाती हुई पगलिया, अरे नहीं !!! कल्याणी को देख रही थी. ये सोचते हुए कि, कल्याणी का कोप फिर कब बरसेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाग्य

ओह बहुत बुरा हुआ। सारिका अपनी माँ के पास बैठते हुए बोली। पर इस में कोई क्या कर सकता है। ये भाग्य तो उनका खुद का चुना हुआ है। अगर पार्टिशन के वक़्त ट्विंकल के ग्रैंड़ फादर इण्डिया आ जाते तो ऐसा कुछ भी न होता। ये तो पकिस्तान की रोज़ की न्यूज़ हो गयी है, लड़की का अपहरण करके जबरन मुस्लिम लड़के के साथ ब्याहा गया। बेचारी ट्विंकल भी इसी का शिकार हुई। हम पकिस्तान में कुछ नहीं कर सकते अब ट्विंकल का यही भाग्य है। इतना कह कर सारिका उठ कर घर के बाहर चल दी। माँ के टोकने पर बोली शाम तक वापस आयेगी। माँ उसे जाते हुए देख कर सोचती रही अच्छा हुआ जो हम बँटवारे के वक़्त इण्डिया आ गए।

सारिका और ट्विंकल दोनों ही लगभग हम उम्र। उम्र के उस पड़ाव पर जहाँ बचपन और जवानी गले मिला करते हैं। दोनों ही सहेलिया पत्रों के द्वारा और कभी–कभी फ़ोन पर भी बातें करतीं। रूबरू मुलाकात कभी नहीं। हाँ दोनों एक–दूसरे की सूरत तस्वीरों से ही पहचानती है।

भारत–पकिस्तान बँटवारे से पहले सारिका और ट्विंकल के दादा सिंध के एक गाँव मीरपुर में एक ही मोहल्ले में रहते थे बँटवारे की आग ने सारिका के दादा को हिल दिया और उन्होंने भारत आने का फैसला कर लिया। पर ट्विंकल के दादा ने यह कह कर मीरपुर छोड़ने से इन्कार कर दिया की उनकी जड़े यहीं जमी हैं और फिर ये उन्मादी दंगे है देर सवेर थम जायेंगे और यहाँ भी अम्न बहाली हो जाएगी।

सारिका के दादा भारत आकर महाराष्ट्र के उल्लहासनगर में बस गए, यहीं शादी की और व्यापार जमाया। जबकि ट्विंकल के दादा कभी अभाव में तो कभी सामान्य तरीके से पकिस्तान के मीरपुर में रहते रहे। पर दोनों खतों के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सहारे जुड़े रहे, उसके नाम से और उसके कन्धों के [illegible] भी।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ दिन पहले टिवंकल का मीरपुर स्थित उसके घर से अपहरण हो गया और उसकी शादी महमूद शाह नाम के लड़के से जबरदस्ती कर दी गयी।

सिंध के तमाम संगठनो और पत्रकारों के दखल से मामला सुप्रीम कोर्ट तक गया पर ट्विंकल को आजाद न कराया जा सका। फ़ोन पर इन सब बातों की खबर ट्विंकल के पिता नंदलाल ने सारिका के पिता रणवीर को रो-रो कर बताई। और उन्ही बातों को जानकर सारिका ने ट्विंकल के लिये भाग्य के ट्विंकल के दादा को दोषी ठहराया।

शाम को गार्डन में टहलते हुए जब अफरोज़ सारिका को एक झुरमुट के पीछे ले गया तो वो चिहुँकते हुए बोली प्लीज अफरोज़ ये सब शादी के बाद।

शादी भी कर लेंगे डियर, हुजूर बालिग तो हो जाएँ। अफरोज़ सारिका के सीने से चिपकते हुए बोला

अच्छा तो बालिग होने से पहले, जनाब ये सब कर सकते है, सारिका तनिक शोखी से बोली।

हाँ, जानेमन अब रहा नहीं जाता, अफरोज़ सारिका के चेहरे पर गर्म सांसे छोड़ता हुआ कहता है।

ओह अफरोज़ ! पर यहाँ नहीं किसी सेफ जगह।

ओह वो सेफ जगह सारिका बेबी की नज़र में कहाँ है।

अफरोज़ अपने होठ सारिका के होठ से सटाते हुए कहता है।

सारिका भी अफरोज़ के होठों से अपने होठ जोड़ने से पहले कहती है- सेफ जगह ढूँढ़ना तुम्हारा काम है हनी।

फिर दोनों अलिंगनबद्ध हो आधुनिक लिप किस मैं मशगूल हो जाते है।

टीवी सीरियल बनाने वाली कम्पनी के दफ्तर के बाहर सारिका खड़ी है। अभी-अभी उसने टीवी सीरियल में बतौर नायिका काम करने के लिए आडीशन दिया है। उसकी सबसे बड़ी तम्मना है की वो रुपहले परदे पर चमके। उसका औटोग्राफ लेने वालो की भीड़ उसके आगे-पीछे घुमे।

सारिका बार-बार घड़ी देखती है, आखिर ये अफरोज़ आया क्यूँ नहीं, उसे झुँझलाहट होती है। वो अभी गुस्से से अपना पाँव ज़मीन पर पटकती है, तभी एक, एक व्हाइट स्कोडा उसके पास आ कर रूकती है। सारिका इस गाड़ी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को पहचानती है, ये अफरोज़ की है। विंडो खोल कर अफरोज़ बोलता है– इस तरह पैर मत पटको, शादी से पहले अगर लंगड़ी हो गयी तो फिर मुझे सोचना पड़ेगा।

व्हाट डू यू मीन लंगड़ी हो गयी !! सारिका बनावटी गुस्से के साथ बोली।

ओके अब गाड़ी में तशरीफ़ ले भी आइये मैडम अफरोज़ दूसरे तरफ का डोर ओपन करते हुए बोला।

बाय द वे आप यहाँ क्यूँ आई थी, क्या बन्दा ये जान सकता है। अफरोज़ गाड़ी गियर में डालते हुए बोला।

हाँ-हाँ क्यूँ नहीं, सारिका तनिक और शोखी बढ़ाते हुए बोली। दरअस्ल मैं यहाँ सीरियल के लिए ऑडीशन देने आई थी।

ओह कौन से स्टूडियो में, अफरोज़ स्कोडा की स्पीड़ बढ़ाते हुए बोला।

'देवांग फिल्म्स प्राइवेट लिमिटेड' सारिका मुँह में चुँइगम डालते हुए बोली।

ओह, उसका मालिक देवांग तो मेरा दोस्त है कहो तो सैटिंग कर दूँ अफरोज़ ने सारिका को आँख मारते हुए कहा।

ओह सच। सारिका के चेहरे पर जहान भर की खुशियाँ खिल उठी।

फिर देवांग से बात करके, सीरियल में सारिका का रोल फिक्स करने के बाद अफरोज़ अपना बाँया हाथ सारिका की जाँघ पर रखते हुए बोल– 'अब तो पार्टी बनती है यार।'

हाँ-हाँ जब कहो, सारिका भी अपना हाथ अफरोज़ के हाथ पर रख के बोलती है।

फिर चलते है मेरे घर, वह आज एकदम खाली है बिलकुल सेफ। अफरोज़ अब सारिका की जाँघ दबा कर बोलता है।

सारिका– शादी से पहले?

अफरोज़– वो भी हो जाएगी यार।

अफरोज़, सारिका के साथ अपने घर पहुँचता है। और सारिका इस वादे के साथ कि बहुत जल्द अफरोज़ उससे शादी करेगा, बिस्तर पर उसे समर्पित हो जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मम्मी–पापा के लाख समझाने और विरोध के बावजूद सारिका अपनी अट्ठारवी सालगिहर पर अफरोज़ से कोर्ट मैरिज कर लेती है। आखिर अफरोज़ अपना वादा निभा रहा है। और तो और आज अफरोज़ की वजह से ही उसकी गिनती पब्लिक फिगर में होती है। टीवी की जानी–मानी कलाकार सारिका कपूर। और अब तो उसका ख्वाब फ़िल्मी पर्दे पर चमकने का है।

तीन साल और तीन बच्चों की माँ। सारिका ने जब भी विरोध किया, अफरोज़ बोला एक बार फैमिली पूरी हो गयी तो फिर तुम आराम से अपने प्रोफेशन में फिट हो सकती हो।

प्रोफेशन!!! वो तो कब का छूट गया। हमेशा प्रेग्नेंट रहने वाली लड़की को कौन काम देगा ? अफरोज़ का रवैया भी काफी बदल गया। गाली–गलौज और बात–बात में मार पीट। सिनेतारिका बनने का सपना तो अतीत हो गया। एक अच्छी गृहणी की तरह रहना भी दुश्वार हो गया।

अफरोज़ का मन भी सारिका से भर गया। वो उसे जी भर कर भोग चुका था। अब उसे एक नयी कली की तलाश थी जिसे वो फूल बना सके। और उसे वो कली कोमल के रूप में मिल गयी। सिने जगत की उभरती हुई तारिका।

वो अफरोज़ का ही ख़त था। काँपते हाथों और धड़कते दिल के साथ सारिका ने पढ़ा–

सारिका ! तुम जानती हो अब हम साथ नहीं रह सकते। तुम्हें अपने प्रोफेशन के लिए मैं आज़ाद करता हूँ। वैसे भी शरियत के एकोर्डिंग हमारी शादी जायज नहीं है, क्यूँ की तुमने इस्लाम कबूल नहीं किया है। फिर भी कोर्ट में हमारी शादी हुई थी, इसलिये तुम तलाक ले सकती हो।

अलविदा

अफरोज़

न जाने कब तक सारिका रोती रही। इस्लाम कबूल नहीं किया ! बच्चों के नाम आसिफ, वसीम और सबा है। अफरोज़ नाम के आदमी के साथ तीन साल से हम बिस्तर हूँ। और इस्लाम कबूल नहीं किया ! रोते–रोते सारिका को ट्विंकल की याद आ जाती है। और ट्विंकल रेप जेहाद का शिकार हुई तो वो खुद लव जेहाद का शिकार है। पार्टीशन के बाद उसके दादा इंडिया आये, फिर भी उसका भाग्य न बदल सका। और उसकी वही दुर्गति हुई जो पकिस्तान में ट्विंकल की हुई। सच, भाग्य तो भाग्य है उसमें किसी का दोष नहीं सिवाए अपने कर्मों के। सारिका अब अपने कर्मों को लेकर पछता रही है। क्योंकि उसके भाग्य का सम्बन्ध उसके कर्मो से ही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुबह की कालिमा

अंकिता आज थोड़ा उलझन में है। वो जल्द से जल्द अपने रूम पर पहुँच जाना चाहती है। न जाने क्यूँ उसे लग रहा है, ऑटो काफी धीमे चल रहा है। वो ऑटो ड्राइवर को तेज़ चलाने के लिए बोलना चाहती है, पर कुछ सोच कर चुप रह जाती है। आज उसे निर्णय लेना है। जिसके लिए उसे शान्ति चाहिए, शाँत जगह। इस समय उसे अपने कमरे से ज्यादा कोई और जगह मुनासिब नहीं लग रही है। पर आज न जाने क्यूँ यह रास्ता उसे कुछ ज्यादा ही लम्बा लग रहा है। वैसे तो वो रोज़ ही इन रास्तों से गुजरती है। यूनिवर्सिटी से उसके घर का रास्ता।

चाय का एक कप लेकर वो विंडो का पर्दा खिसका कर खड़ी हो जाती है। चाय का एक घूँट ले कर वो विंडो से नीचे नज़र दौड़ाती है। इस विंडो से वो एक पतली कोलतार की सड़क देख सकती है। रोज़ ही देखती है। इससे अधिकतर पैदल राहगीर ही गुजरते है। कुछ दुपहिया वाहन भी। कभी कभार इक्का दुक्का लाइट मोटर व्हीकल भी। बड़े वहाँ से गुजर नहीं सकते। सड़क के दोनों मुहाने पर जड़ वाहनों का प्रवेश निषेध का साइन बोर्ड भी लगा है।

वो चाय का घूँट लेती है। इस वक्त सड़क लगभग सून-सान है। इक्का-दुक्का लोग गुजर रहे हैं। तभी उसकी नज़र सड़क पर आ रहे तीन लोगों पर पड़ती है। एक लड़की, दो लड़के। अंकिता उन्हें तब तक देखती रहती है, जब तक वे उसकी खिड़की के नीचे से गुजर कर सड़क के दूसरे मुहाने से टर्न लेकर दिखना बंद नहीं हो जाते।

अंकिता उन तीनों को आखिरी मुहाने तक देखती है। उनकी परछाई के छिप जाने तक। उसके होंठो पर मुस्कान तैर जाती है, कप खाली हो चुका है,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंकिता किचन में जा कर खाली कप वाशबेसिन में रखती है। वापस आ कर बेड पर लेट जाती है। सर के नीचे तकिया रख कर आँखे मींच लेती है।

आज उसे निर्णय लेना है।

किसी और के लिए नहीं, खुद के लिए।

उसकी आँखों में एक के बाद एक, दो चित्र आते हैं।

पहला चित्र है, समीर का है जो इसी गली के मुहाने पर बसे एक घर में किराये पर रहता है। पिछले छह-सात महीने से वो उसे जानती है। समीर, स्थानीय स्तर पर नाट्य संस्था से जुड़ा है। नुक्कड़ नाटक का मंचन करता है। खुद ही लिखता भी है और निर्देशित भी। पर अब तक उसको कोई विशेष सफलता नहीं मिली है।

अंकिता एक नुक्कड़ नाटक देखते समय समीर से मिली थी।

पहली मुलाकात

पहली मुलाक़ात में ही समीर, अंकिता को अलमस्त नज़र आता है। हमेशा हँसता चेहरा, हमेशा मजाक के मूड में। पहली मुलाकात में ही समीर अंकिता से यूँ मिलता है ज्यों पहले कई बार मिल चुका हो।

उसका बेझिझक अंकिता को यार कह कर बुलाना, टाइम जानने के लिए बिना उसको पूछे, उसकी कलाई पकड़ कर घड़ी से टाइम देख लेना।सब कुछ इतनी आसानी से समीर ने किया मानो वो काफी पुराने दोस्त हो।

उसी दिन समीर उसे बाइक पर उसके काम तक छोड़ता है। अंकिता जब बाइक से उतर कर जब उसे थैंक्स बोलना चाहती है। तो वह हँसने लगता है दीवानावार, काफी देर बाद वो खुद को संयत करके ऊँगली से इशारा करके गली के दूसरे छोर को दिखा कर बोलता है, वहाँ है मेरा रूम। इतना करीब रह कर भी इतनी देर से मुलाकात, अंकिता भी हँस पड़ती है।

फिर वो अक्सर मिलने लगते है। दोस्ती प्रगाढ़ हो जाती है। पर उनके बीच प्यार जैसा कुछ नहीं। अंकिता ने कभी उसकी अनुमति भी नहीं दी।

आज सुबह समीर उसे प्रपोज करता है। जब वो यूनिवर्सिटी के लिए निकलती है, तो गली के दूसरे छोर पर समीर अपनी बाइक पर बैठा हुआ है, अंकिता को देख कर मुस्कराता है।

अंकिता उसकी बाइक पर बैठ जाती है। लगभग रोज़ का नियम है। समीर, अंकिता को चौराहे तक छोड़ता है, जहाँ से उसे यूनिवर्सिटी जाने के लिए ऑटो मिल जाता है। और समीर वहाँ से नाट्य मंडली की तरफ चला जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज अंकिता जब बाइक से उतर कर बाय कहके जाने लगी तो 'दो मिनट प्लीज' बोल कर समीर उसे रोक लेता है। अंकिता उस के पास आकर खड़ी हो जाती है।

बाइक से उतर कर समीर, अंकिता के करीब आता है और होंठो पर मुस्कान बिखेर कर कहता है– यार रोज़ खाना–नाश्ता बनाने में और बर्तन धुलने में काफी टाइम निकल जाता है। इस वजह से मेरा काम में पूरा ध्यान नहीं लगता है।

अंकिता चुप रहती है, उसे समीर की बात का कोई जवाब नहीं सूझता है।

समीर आगे कहता है– मैं सोचता हूँ, ये काम तुम्हारे हवाले कर दूँ।

अंकिता चौंक पड़ती है– 'व्हाट' मैं लखनऊ में क्या आयागिरी करने आई हूँ, अरे में यूनिवर्सिटी में जर्नलिज्म की स्टूडेंट हूँ। आप ने ये कैसे सोच लिया।

खिलखिला कर हँस पड़ता है समीर, कई पलों तक निश्छल हँसी। फिर साँसें संयत करके कहता है– अरे समझी नहीं आप– मैं ये काम आपको आया समझकर नहीं बल्कि अपनी बीवी की हैसियत से देना चाहता हूँ।

'अंकिता मुझसे शादी करोगी' ।

अचम्भित रह गयी थी अंकिता, समीर के प्रपोज के इस अंदाज पर। प्यार के रस्ते को पार करके सीधे शादी। चुप रह गयी वो। आँखे नीचे करके वहाँ से जाने लगी तो पीछे से समीर बोला– जवाब नहीं दिया आपने।

वो रुकी नहीं चलते–चलते बोली इस टॉपिक पर फिर कभी बात करेंगे, अभी क्लास के लिए देर हो रही है।

अंकिता क्लास रूम में आ के बैठ गयी। उसने कभी समीर को इस नज़र से नहीं देखा, न कभी सोचा। पर उसके प्रपोज का ये अंदाज उसे गुदगुदा गया था।

अंकिता उठती है, वापस अपने लिए चाय बनाती है। चाय के हल्के-हल्के सिप लेते हुए उसकी आँखों में दूसरा चित्र आता है।

यूनिवर्सिटी में एक साल सीनियर– 'अतुल' उसके गीतों और कविताओं की सारी यूनिवर्सिटी दीवानी है। साँवले और सौम्य अतुल को इस वर्ष युवा कवि के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके लेखन से अंकिता भी प्रभावित है और शायद उसकी तरफ आकर्षित भी है। कई बार उन दोनों की मुलाकात यूनिवर्सिटी के एकांत में होती है, और उस वक़्त अतुल, अंकिता को अपनी प्रेम कविताएँ सुनाता है। जो अंकिता के दिल में गुदगुदी पैदा करती हैं।

आज लंच टाइम के बाद जब वो लाइब्रेरी में बैठी थी, तभी वहाँ अतुल आया और कई कविताएँ सुनाने के बाद झिझकते-शर्माते अंकिता को प्रपोज करता है।

एक ही दिन में अंकिता को दो लोग प्रपोज करते है, जिन्हें वो आज तक अपना मित्र मानती आई है। पर उनमें से न जाने क्यूँ उसे अतुल ज्यादा भाता है। सौम्य और शाँत। देश का सबसे ज्यादा उभरता हुआ कवि। जब वो बिस्तर पर लेट कर अतुल और समीर की तुलना करती है, तो खुद को अतुल के ज्यादा करीब पाती है। उसका भविष्य यकीनन अतुल के साथ सुरक्षित है, क्यूँकि वो एक स्थापित्य साहित्यकार हो चुका है। जबकि समीर एक स्ट्रगलर है और उसके खुद के भविष्य का ठिकाना नहीं है। सो वो फैसला करती है,अतुल के प्रपोज को स्वीकार करने का। अंकिता बिस्तर पर करवट लेती है और अचानक ही उसके दीमाग में एक विचार करवट लेता है।

अंकिता एक बार उन दोनों को करीब से जानना चाहती है, कोई अंतिम फैसला करने से पहले। परसों उसका बर्थडे है। उस दिन वो अपने दोनो प्रेमियों में से किसी एक से मिलने का प्लान करती है।

पर इस बार वो समीर को प्राथमिकता देती है। क्यूँकि पहले उसने ही प्रपोज किया था। अंकिता फ़ोन उठती है और काँपते हाथों से समीर का नंबर डायल करती है।

हैल्लो ! समीर बोलता है, अरे इतनी रात को अंकिता क्या कुछ प्राब्लम तो नहीं हुई ?

नहीं-नहीं समीर सब ठीक है, बस मैंने आपको इनवाइट करने के लिए फ़ोन किया था। और फिर अंकिता उसे अपने जन्मदिन के लिए आमंत्रित करती है। जिसे समीर हँसते हुए कबूल कर लेता है।

अंकिता मोबाइल डिसकनेक्ट करने से पहले बोलती है, तो फिर ठीक शार्प ग्यारह बजे आप पहुँच रहे है।

सुबह ग्यारह बजे न ? समीर कन्फर्म करता है।

नहीं यार, रात में क्यूँकि मैं रात ग्यारह बजे ही पैदा हुई थी, अंकिता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थोड़ी शोखी से बोलती है।

उस दिन समीर, अंकिता को फ़ोन करता है दोपहर को पूछता है- बर्थडे की सब तैयारी हो गयी और क्या सब लोग इनवाइट हो गए है।

हाँ सब तैयारी हो गयी है- अंकिता बोलती है पर मेरे इस बर्थडे पर सिर्फ आप इनवाइट् है।

सिर्फ मैं – समीर थोडा चौंकता है।

हाँ, अंकिता इतना ही बोल पाती है कि नेटवर्क प्रोब्लम की वजह से फ़ोन कट जाता है। थोड़ी देर ट्राई करने के बाद अंकिता अन्य कामों में व्यस्त हो जाती है।

आज अंकिता ने टी-शर्ट और स्कर्ट पहनी है, घुटने के ऊपर स्कर्ट। उसने एक दिन नाटक में समीर की नायिका को ऐसी ही ड्रेस में देखा था। वह आज समीर को अच्छी तरह से समझना चाहती है। टेबल पर उसने केक सजा दिया है। अंकिता की गोरी कलाई में बँधी घडी की सुइयाँ अब ग्यारह बजाना चाहती है।

अंकिता, समीर को याद दिलाने की गर्ज से उसे फ़ोन करती है, उधर से समीर कहता है, बस डियर पहुँच रहा हूँ, थोडा ट्रैफिक में हूँ।

घड़ी की सुइयाँ ग्यारह क्रॉस कर चुकी है। समीर का फ़ोन नॉट रिचेबल है। अंकिता बैचेनी से टहलती है फिर बैठ जाती है।

अंकिता की आँख खुलती है, वो टेबल पर ही सर रख कर सो गयी थी। घडी पर नज़र डालती है तो तीन बज चुका है। समीर का फ़ोन अब भी नॉट रिचेबल है। अंकिता के चेहरे पर गुस्सा झलक पड़ता है। वो पैर पटक कर उठती है। और तेज़ क़दमों से टहलने लगती है फिर अचानक वो गुस्से में अतुल का नंबर डायल करती है।

केक खिलाने के वक़्त अतुल के हाँथ से केक फिसल कर अंकिता की शर्ट पर गिर जाता है। अंकिता अभी आती हूँ, कह कर वाशरूम की तरफ चली जाती है।

टी-शर्ट उतार कर वो उस पर लगे केक को साफ़ कर रही है, तभी वहाँ अतुल आ जाता है। सीएफएल की रोशनी में अंकिता की नंगी पीठ और कंधे दूध की तरह चमक रहे है।

अतुल आगे बढ़ कर अपने होठ अंकिता के कंधे पर रख देता है। अंकिता चिहुँक कर पलटती है तो बेलिबास उरोज अतुल के सीने में दुबक जाते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। अतुल उसे भींचते हुए आई लव यू अंकिता कहता है।

आई लव यू टू! अंकिता के होंठो से सिसकारी के साथ निकलता है।

अतुल, अंकिता को गोद में उठा कर उसे बिस्तर पर लाकर लिटा देता है। इस वक्त उसकी आखें बंद है और साँसे तेज़ है। वो अतुल को पाने बगलमें महसूस करती है। कोई विरोध नहीं। अतुल के हाथों की हरकतों के आगे वह समर्पित हो जाती है। और अपने आपको उसके हवाले कर देती है।

किसी कवि सम्मलेन में जाने केलिए अतुल सवेरे छः बजे अंकिता के रूम से निकलता है, दरवाज़े पर वो अपनी नयी-नवेली प्रियतमा के होंठो को किस करता है।

अतुल को विदा करके, अंकिता वापस निढाल शरीर के साथ बिस्तर पर सो जाती है।

कई बार डोर बेल बजने के बाद उसकी आँख खुलती है। कोई बदस्तूर डोर बेल बजा रहा है। अंकिता झुंझुला कर उठती है। डोर खोलती है तो सामने समीर है। हाँथ में फूलों के गुलदस्ते और अपनी चिरपरिचित मुस्कान के साथ।

अंकिता तंज भरे लहजे में कहती है, अब क्या लेने आये हो, मेरा बर्थडे रात के ग्यारह बजे था, दिन के ग्यारह बजे नहीं। इतना बोल कर वो वापस दरवाज़ा बंद करने को होती है पर समीर उसे एक तरफ करके अन्दर आ जाता है।

टेबल पर रखे केक को समीर ऊँगली में ले कर चखता है। फिर अंकिता के सामने घुटनों पर बैठ जाता है।

हाँथ का गुलदस्ता उसकी तरफ बढ़ा के समीर कहता है- हैप्पी बर्थडे डियर।

'डोन्ट कॉल मी डियर '- इतना कह कर अंकिता घूम कर खड़ी हो जाती है।

उसके पीछे खड़े होकर समीर कहता है- मैं जनता हूँ आप नाराज़ है, मेरी वजह से आपका बर्थडे सेलिब्रेट न हो पाया, पर मैं क्या करूँ अंकिता रात बहुत काली होती है। इतनी की इसमें जिंदगियाँ काली हो जाती है। जरा सोचो जब लोगों को मालूम पड़ता सारी रात हम साथ थे बंद कमरे में तो लोग न जाने क्या-क्या तुम्हारी पवित्रता के बारे में अफवाहे फैलाते। मैं कैसे सुन पाता ये सब उसके बारे में जिसे मैं प्यार करता हूँ।

एक सन्नाटा खिंच गया था दोनों के बीच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ पलों बाद वो बोली – समीर तुम तो रात में चमकते सूरज हो, मैं ही तुम्हें जान न पाई। अब मैं तुम्हारे लायक नहीं हूँ क्यूँकि मैं रात के अँधेरे नहीं सुबह के उजाले से लुटी हूँ। मैं अब सुबह की कालिमा हूँ। इतना कह कर वो वही ज़मीन पर रोते–रोते गिर पड़ी। उसने एक महान इंसान को पहचानने में गलती कर दी थी।

कुछ लम्हों बाद समीर ने उसे उठा कर चेयर पर बैठाया और बोल– मैं अब भी अपने प्रपोज का जवाब माँगता हूँ, क्या मुझसे शादी करोगी तुम ?

कुछ बोल न सकी वो। उसे चुप देख समीर बोला– ठीक है ! तुम आराम से सोचकर बताना कल या और कभी, अभी मैं चलता हूँ। और वो पलट कर चल दिया।

अंकिता जाते हुए देवता को देख रही थी और फिर भाग कर वो समीर की पीठ से लिपट गयी और वह अनायास बार–बार यही दोहरा रही थी –

'हाँ मैं तुमसे शादी करुँगी'

'हाँ मैं तुमसे शादी करुँगी'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोश्त

कट्टरवादी उबेद के भाषणों ने अपना रंग दिखाया और एक के बाद एक शहर दंगों की आग मैं धूँ-धूँ करके जलने लगे। सड़कों का रंग काले से लाल हो गया, बस्तियाँ वीरान हो गयीं। वर्षों से साथ रह रहे लोगों ने एक दूसरे के खून को पानी की तरह बहाया। कल तक जो लड़की उनके लिए बेटी, बहन की तरह थी, आज सरेआम उसकी अस्मत को कुचल डाला। न जाने कितनी लड़कियाँ हवस की भेंट चढ़ गयीं।

सुलेमान जो विशालगढ़ में अपनी बहन सबा और अपने दोस्त प्रशांत के साथ रहता था। उसका दिल धड़क उठा। वो एक प्रवेश परीक्षा के लिए अपने गृहनगर आया था। उसके गृहनगर में उसके मजहब की बहुलता थी। सो वो थोड़ा बेखौफ था मगर उसकी चिंता तो अपनी बहन सबा को ले कर थी। जो उसके दोस्त प्रशांत के साथ उस शहर में फँस गयी थी, जो साम्प्रदायिक दंगों से धूँ-धूँ करके जल रहा था।

सुलेमान फोन पर अपनी बहन और दोस्त से बात करता है। वो प्रशांत से बोलता है की वो सबा को सुरक्षित उस तक पहुँचा दे। प्रशांत, सुलेमान को फ़िक्र न करने को कहता है। और बोलता है वो सबा को लेकर आ रहा है।

शहर की हालत देख कर सबा, प्रशांत को रोकती है और उससे कहती है वो अकेले चली जाएगी। प्रशांत कहता है - "सबा मैं तुम्हें यूँ अकेले कैसे जाने दे सकता हूँ जबकि शहर में लड़कियों का गोश्त, बकरियों के गोश्त से भी सस्ता हो चुका है।"

नहीं प्रशांत तुम मेरी फ़िक्र न करो मैं चली जाउंगी, सबा प्रतिवाद करती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसे कैसे चली जाओगी। अगर तुम्हें कुछ हो गया तो मैं सुलेमान को क्या मुँह दिखाऊँगा। प्रशांत अपनी बात जोरदार ढंग से कहता है।

सबा, प्रशांत को मना नहीं कर पाती है। वो प्रशांत के साथ अपने शहर रवाना होती है। हर तरफ लूट, आग और तबाही का मंजर।

प्रशांत किसी तरह से चोर रास्तों से सबा को ले कर बस स्टैंड़ पहुँचता है। वहाँ पर कई बसे धूँ-धूँ करके आग की लपेट में थीं। तमाम पैसेंजेर सहमे दुबके शहर से निकल जाने की फिराक में थे।

शायद उस बस के ड्राइवर और कण्डक्टर उसी शहर के थे। तभी सभी यात्रियों के कहने पर वो बस ले जाने को तैयार होते है। ये एक लक्जरी स्लीपर बस है। सबा और प्रशांत दोनों एक-एक सिंगल स्लीपर सीट ले लेते है। सबा नीचे वाली बर्थ पर लेट जाती है और प्रशांत ठीक उसके ऊपर वाली बर्थ पर।

बस कोई बीस-पच्चीस पैसेंजर ले कर जलते शहर को छोड़ कर आगे बढ़ती है। आगे कुछ लोग जलते टायर डालते है, कुछ पत्थर भी फेंकते है। पर ड्राइवर कुशलता से बस को शहर से निकाल कर हाईवे पर ले आता है। बस मौजूद यात्रियों को थोड़ी रहत मिलती है।

अभी हाईवे पर बस को दौड़ते दस-बारह मिनट ही होते हैं कि, 'जय बजरंग बली' और 'जय श्री राम' के नारे लगाते हुए भीड़ का एक जत्था सड़क पर प्रकट होता है। न जाने कहाँ से डीजल भरे जलते हुए ड्रम सड़क के बीचो-बीच आकर ठहर जाते है। ड्राइवर बहुत कोशिश करता है पर नाकाम होता है। बस का डोर काँच तोड़ के खोल लिया जाता है।

हाथ में नंगी तलवारें और तमंचे से लैस युवको का जत्था बस के अंदर घुसता है। तमाम यात्री ड़र से सहमे बैठे है, कई की तो घिग्घी बँध गयी है। एक के सर पे मुसलमानी टोपी देखकर बिना किसी सवाल-जवाब के उसके सीने में गोली दाग दी जाती है। बेचारा हाय अल्लाह कह कर वहीं सीट पर ढेर हो जाता है। दो-तीन को और बस से उतार कर पास के जंगल में ले जाया गया। जहाँ से गोली की आवाज और इंसानी चींखे सुनाई पड़ी।

उनमे से एक ने सबा को कंधे से पकड़ कर उठा लिया, और कंधे पर डाल कर बस से नीचे उतर गया। बेचारी मुस्लिम वेश-भूषा की वजह से उन बलवाईयों की नज़र में आ गयी। सबा के साथ ये बड़ी तेज़ी से हुआ। बेचारी जब तक कुछ समझती वो बलवाईयों की गिरफ्त में थी और वो उसे जंगल की जानिब ले जा रहे थे।

छटपटा कर सबा के होंठो से चीख निकली .. प्रशांत ....प्रशांत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिर्फ दो बार सबा प्रशांत को बुला पाती है तभी बलवाई उसे ज़मीन में खड़ा करके, गाल पर एक झन्नाटेदार थप्पड़ मार कर बोलता है,- साली मुस्लिम हो के मदद के लिए हिन्दू को पुकारती है। तुझे कोई हिन्दू नहीं आयेगा बचाने। और वो सबा को खींच कर जंगल की तरफ ले जाने लगता है।

सबा इसका पुरजोर विरोध करती है। पर उस बलवाई के दो-तीन साथी और आ जाते है और सबा को ज़मीन पर घसीटते हुए जंगल की तरफ ले जाने लगते है। पथरीली ज़मीन पर खींचे जाने से सबा के जगह-जगह से कपड़े फट जाते है। और खून की बूंदे छलक पड़ती है।

सबा के सीने की तरफ उस वहशी का हाँथ बढ़ता है, सबा की आँख बंद हो जाती है। पर वो हाथ सबा के सीने तक नहीं पहुँच पाता, उसे बीच में ही प्रशांत रोक देता है।

बहुत देर तक प्रशांत उनका मुकाबला करता है। एक पेड़ के तने से सटी हुई ड़री, सहमी सबा उन बलवाईयों से उसके खुद के लिए प्रशांत को लड़ता देखती है। पर ये कोई फिल्म तो नहीं जहाँ हीरो, दस-बारह विलेन पर भरी पड़ता है। आखिर प्रशांत कि शक्ति कम पड़ती है और वो पिटते-पिटते बेहाल हो जाता है। एक बलवाई की जूते की ठोकर से वो छिटक कर दूर जा गिरता है।

और जब वो वहशी अपने होठ सबा के चेहरे के जानिब बढ़ाता है तो प्रशांत चीख पड़ता है, भगवान के लिए उसे मत छुओ।

वहशी जगह पर ही पलटकर जलाली आँखों से प्रशांत को घूर कर बोलता है, अच्छा साले मुसलमान होकर अब भगवान को पुकारता है।

नहीं-नहीं हम हिन्दू हैं, प्रशांत थोड़ी तेज़ आवाज में बोलता है।

फिर इसने मुसलमानी कपड़े क्यूँ पहन रखे है उस वहशी ने सबा को ऊपर से नीच्रे तक घूरते हुए बोला

उसे मुस्लिम बलवाईयों के हाथों से बचाने के लिए, प्रशांत अब उठकर घुटनों पर बैठ गया है। सबा इस वक़्त बड़े गौर से प्रशांत का चेहरा देखती है।

अच्छा और अगर तू झूठ बोल रहा है तो हम तेरे सामने इस लड़की का गोश्त नोचेंगे, वहशी अब चलते हुए प्रशांत के करीब आ गया। उसके बाकी साथी भी प्रशांत को घेर लेते है। और जबरन उसकी पैण्ट और अंड़रवियर उतार देते है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सबा आखें भींच लेती है।

सभी बलवाई चिल्ला पड़ते है – अरे ये तो सही में हिन्दू है।

वो सभी प्रशांत को उठाते है, वह वापस अपने कपड़े पहनता है।

अरे अब ये बता दे इससे तेरा रिश्ता क्या है, वो वहशी प्रशांत की पीठ थपथपाते हुए बोलता है।

प्रशांत हौले–हौले सबा के पास पहुँचता है और बोलता है– मेरी मंगेतर और फिर अपने खून से सबा की माँग भरते हुए कहता है और अब मेरी पत्नी।

सबा प्रशांत के क़दमों में बैठ कर रोने लगती है।

चलती बस में सबा, प्रशांत के कंधे पर सर रख के पूछती है, आपने मेरी इज्जत बचाने के लिए मेरी माँग में सिन्दूर भरा है ना।

नहीं सबा, अब मैं तुमसे शादी करूँगा, तुम्हारे घर पहुँच कर मैं सुलेमान से बात करूँगा।

सबा, प्रशांत के कंधे पर सर टिका कर सो जाती है, और प्रशांत उसके बाल सहलाने लगता है।

बस, सबा के शहर पहुँचती है। यहाँ भी दंगे की आग भड़की है, चारों तरफ खून और मौत का मंजर। बस रूकती है। और पैसेंजर के साथ पहले प्रशांत उतरता है, फिर उसके पीछे सबा।

सबा की हालत देख कर सुलेमान, प्रशांत से पूछता है, अरे इसकी ये हालत कैसे हुई।

नहीं–नहीं सब ठीक है, प्रशांत बोलता है, सबा मेरे नीचे लेटी थी।

अच्छा ! जिसका ड़र था वही हुआ तू मेरी बहन के ऊपर लेटा था और उसी वक़्त वो प्रशांत के पेट में चाकू घोप देता है।

सबा चीखती है, भाई जान आपने ये क्या किया !!! वो अभी आगे बोलना चाहती है तभी बलवाईयों का एक जत्था आता है और सबा को उठाते हुए बोलता है सही किया अब हम इस काफ़िर की बीवी का गोश्त नोचेंगे। सबा चिल्लाती रहती है।

बलवाई सबा को उठा ले जाता है और सुलेमान देखता रह जाता है। बलवाई सबा के सिन्दूर को देख कर उसे हिन्दू समझ बैठते है और अगले दिन उसकी लाश मिलती है जिसका तमाम गोश्त नुचा होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क़र्ज़

मैं सुबह सुबह फ्रेश होकर मनोज के घर पहुँच गया था. मनोज जो मेरे बचपन का मित्र था, मुझे देखते ही खुश हो गया. मेरे गले लगकर वो न जाने मुझे कितने उलाहने देने लगा, फोन क्यों नहीं किया? कहाँ था इतने दिन? और न जाने क्या क्या. वो तो शायद गिले-शिकवे करता ही रहता, अगर बीच में उसकी मम्मी न आ जाती.

आँटी, यानी मनोज की मम्मी ने मुझे प्यार से बैठाया और मनोज से बोली, तू बोलता ही जा रहा है देखता नहीं इतनी ठण्ड में कैसे बेचारा सुबह. सुबह तुमसे मिलने आ गया है. आँटी मेरे सर पर प्यार से हाँथ फिरा कर ये बोल कर चली गई. तुम दोनों दोस्त बैठकर बातें करो, तब तक मैं तुम दोनों के लिए चाय और नाश्ता लेकर आती हूँ. मैं घर से नाश्ता करके आया था फिर भी उन्हें मना न कर सका. बचपन से ऐसा ही था न जाने क्यों मैं उन्हें किसी भी बात के लिए मना नहीं कर पाता था, इसका कारण शायद यह था कि बचपन से ही आँटी का मुझ पर पुत्रवत स्नेह था.

मनोज, अपनी मम्मी के जाते ही फिर मुझसे चिपट कर बैठ गया और बोला. बता रवि कैसा चल रहा है मुम्बई में, जॉब कैसी है, किसी लड़की से दोस्ती हुई या अभी तक ऐसा ही है, उसने फिर ढ़ेर सारे प्रश्न मेरे तरफ उछाल दिये थे. मैं बोला थोड़ा शाँत हो जा तू मैं सब बताता हूँ तुझको. एक तो मेरी जॉब बिल्कुल ठीक चल रही है, दूसरी बात जो ज्यादा महत्व की है वो यह है कि एक बेहद खूबसूरत लड़की से मेरी दोस्ती भी हो गई है.

मेरी यह बात सुनकर मनोज को काफी खुशी हुई थी. वह बोला नाम तो बता भाभी का.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं बोला, संजोत.

हाय कितना प्यारा नाम है वह चहकते हुए बोला कोई फोटो-वोटो लाया है उसका.

मैंने मुस्कराते हुए जेब से पर्स निकाल कर उसमें से संजोत का फोटो निकाल कर मनोज की तरफ बढ़ा दिया और उसने मेरे हाँथ से फोटो छीन लिया. कुछ सेकेंड़ फोटो देखने के बाद वह बोला, क्यों बे, इतनी सुंदर लड़की ने तेरे साथ दोस्ती कैसे कर ली.

मैंने कहा, तू सच बोलता है मनोज वास्तव में संजोत बहुत ही सुंदर है. हम अभी हाँथ में फोटो लेकर बात कर ही रहे थे इतने में हाँथ में नाश्ते की ट्रे लेकर आँटी आ गई.

मनोज के हाथ में तस्वीर देख कर ट्रे को मेज पर रखते हुए पूछा, किसकी तस्वीर है?

मैंने बहाना बनाने की कोशिश की और बोला कुछ नहीं आँटी बस ऐसे ही, पर आँटी ने मनोज से वो तस्वीर ले ली. कुछ देर वो अपलक उसे निहारती रही फिर बहुत प्यार भरी नजरों से मुझे देखकर बोली, बहुत ही प्यारी बच्ची है. तूने घर पर बात की.

मैंने इन्कार में सर हिलाया. तो वो बोली- ठीक है वह खुद मेरे घर जाके मेरी मम्मी से बात करेंगी.

मैंने अबकी बार सहमति में सर हिलाया और बदले में वो मुस्कराकर वापस अंदर चली गई.

मैं मनोज की तरफ देखकर बोला फिर क्या प्रोग्राम है आज का.

प्रोग्राम क्या है घूमेंगे, सैर करेंगे, मूवी देखेंगे पर सबसे पहले नाश्ता करेंगे, मनोज की इस बात पर मैं हँसे बिना न रह सका.

खैर, हमने नाश्ता किया, नाश्ते में मेरे मनपसन्द आलू का पराठे थे, चाय पी कर और मनोज की मम्मी से आज्ञा लेकर हम बाहर घूमने के लिए निकले.

हम लोग लॉन पार करके जैसे ही मेनगेट पर पहुँचे, वैसे ही स्कूटी से पारूल आ गई. पारूल जो मनोज की बहन है, बचपन से मुझे भी हर रक्षाबंधन से पहले राखी डाक या कुरियर द्वारा मिल ही जाती थी. मेरी कोई बहन नहीं थी, पर पारूल ने कभी इसकी कमी मुझे महसूस नहीं होने दी.

मुझे देखकर वह स्कूटी खड़ी करके दौड़ कर सीधे मेरे पास आ गई.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कब आये भैया, और आते ही कहाँ जा रहे हो, मुझसे मिले भी नहीं मेरे बारे में पूछा भी नहीं होगा. वह मासूमियत से ढ़ेर सारे प्रश्न पूछे जा रही थी. मैंने प्यार से उसके गाल को थपथपाया और बोला ऐसा हो सकता है क्या कि मैं तुझसे न मिलूँ, तेरे बारे मैं न पूछूँ! मैं तो बस थोड़ा बाहर घूमकर वापस आ रहा था.

वह इठलाते हुए बोली मैं अच्छी तरह जानती हूँ आप लोगों का थोड़ा घूमना. सुबह जो निकले तो शाम से पहले आने से रहे. फिर वह मेरा हाँथ पकड़ कर बोली अच्छा यह बताओ मेरे लिए क्या लाये हो?

मैं उसके सर को सहलाते हुए प्यार से बोला बहुत कुछ लाया हूँ तेरे लिए, शाम को घर पर आके ले जा. फिर मैंने उससे पूछा पढ़ाई कर रही है या ऐसे ही दिन भर घूमती रहती है.

वह बोली आपको क्या लगता है?

मैंने कहा. मैं जानता हूँ तेरा अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान होगा. मनोज जो अब तक मूक़दर्शक बना खड़ा था. बीच में बोला पारूल तू शाम को रवि से जी भर के बातें करना पर अभी हम लोगों को जाने दे.

पारूल मेरी तरफ देखकर बोली ठीक है रवि भैय्या आज आपको छोड़ती हूँ, पर कल का दिन मेरे नाम, मैं कल सवेरे सवेरे आपके घर आती हूँ. मैंने कहा ठीक है जैसा आपका हुक्म! पर अभी क्या मैं जाऊँ? उसने हाँ में सर हिलाया और फिर कोई गीत गुनगुनाते हुए अन्दर की तरफ चली गई.

मनोज, गैरेज की तरफ बढ़ा तो मैं उसे रोक कर बोला. मैं गाड़ी लाया हूँ बाहर खड़ी है उसी में चलते हैं.

खैर, पूरे दिन मैं और मनोज घूमते रहे, पुराने दोस्तों से मिले, लंच किया मूवी देखी. बातों ही बातों में मैंने अपने पुश्तैनी घर जाने की बात की तो मनोज भी तैयार हो गया. मेरा पुश्तैनी घर लखनऊ से कोई अस्सी किलोमीटर दूर हरदोई रोड पर था, मैं बचपन से ही मम्मी, पापा व भाई–बहन के साथ लखनऊ में रहा था, कभी. कभार ही मैं अपने दादा जी के पास गाँव जाता था हमारी पुश्तैनी हवेली अब भी मौजूद थी, हमारे सबसे छोटे चाचा अपने परिवार के साथ उसमें रहते थे.

अगले दिन मम्मी से इजाज़त लेकर हम दोनों दोस्त अपने गाँव के लिए निकले. मैं ड्राइव कर रहा था और मनोज मेरे बगल वाली सीट पर बैठा हुआ था. मौसम खुशनुमा था, हल्का संगीत स्टीरियो पर चल रहा था मैं और मनोज गुजरे दिनों की बातों में मशगूल थे. सफर कब कटा मालूम ही नहीं चला, हम अपने गाँव के करीब पहुँच चुके थे, मैंने कार को मेन रोड से उतारकर गाँव जाने वाली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रोड पर डाल दिया था यह रोड, हाईवे जैसी अच्छी नहीं थी पर कोलतार की बनी हुई थी, पहले यहाँ पर खडंजा लगा हुआ था, हाईवे से मेरे घर की दूरी करीब दस मील थी.

हाईवे से गाँव को जोड़ने वाली सड़क बेहद खराब थी, कई जगह तो वो पूरी तरह गहरे गड्ढे में तब्दील हो चुकी थी, इसलिए मैंने जेन की रफ्तार काफी कम कर दी थी, मैं और मनोज विभिन्न मुद्दों पर बात करते रहे .

मैं अब गाड़ी ड्राइव करने के साथ साथ खिड़की से बाहर दृश्यों का भी आनन्द लेने लगा था, हालांकि मैंने खिड़की पर शीशे चढ़ा रखे थे ताकि मैं बाहर की ठण्ड से बच सकूँ. मनोज ने भी ऐसा ही किया था, वैसे भी दिसम्बर के अन्त में भारत के इस भाग में ठण्ड कुछ ज्यादा ही पड़ती है.

अभी गाड़ी इस खस्ताहाल सड़क पर कुछ देर ही चली थी कि थोड़ी दूर पर एक मैदान में कुछ लड़के क्रिकेट खेलते हुए दिखाई दिये. 'ये खेल कितना लोकप्रिय हो गया है' मैंने मनोज से बोला, मनोज बदले में सिर्फ मुस्करा दिया.

मैं फिर उससे बोला 'क्या बोलते हो'. कुछ देर लुत्फ लेते हैं, इस पर वो फिर मुस्कुराया फिर बोला. ऐसी छोटी-छोटी इच्छाओं का दमन तो कभी नहीं करना चाहिए. उसकी सहमति पाते ही हम मैदान के नजदीक गाड़ी के बोनेट के सहारे खड़े हो गये. मैंने अपना पसंदीदा ब्रांड़ गोल्ड फ्लैक की सिगरेट सुलगा कर होठों से लगा ली थी, हाँ मनोज को ऐसा कोई ऐब न था, पर मैं सिगरेट के साथ-साथ कभी-कभी बियर भी पी लिया करता था.

हम दोनों बच्चों को खेलते हुए देखने लगे. अभी हमें दस-बारह मिनट ही हुए होंगे कि मैं एक तरफ चल दिया. पीछे से मनोज ने पुकारा कहाँ चले रवि. जवाब में मैंने अपनी सबसे छोटी अंगुली उठा दी

मैं अभी एक पेड़ के नीचे गया ही था कि मेरी नजर जमीन पर पड़े कुछ सिक्कों पर पड़ी. पाँच-पाँच के सिक्के एक के ऊपर एक रखे हुए थे, मैं बिना लघुशंका किये बैठ गया उन सिक्कों के करीब. उन सिक्कों के नीचे की मिट्टी काफी निकल गई थी, ऐसा शायद बारिश की वजह से हुआ था. शायद तीन चार मौसम की बारिश, मैंने आहिस्ता से सिक्के उठाये पाँच-पाँच के छः सिक्के यानी तीस रुपये. मैंने जेब से रूमाल निकाल कर सिक्के साफ करने चालू किए और इसी के साथ मेरे दिमाग पर जमी हुई मिट्टी भी साफ होने लगी. मेरे दिमाग में अंधड़ चलने लगा, गुजरी तस्वीरें एक-एक करके आँखों से गुजरने लगी.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाँ, वो मई की तपती दोपहर थी, गर्म हवायें अपने पूरे शबाब पर थी, लू के थेपेड़े चेहरे को झुलसा रहे थे. मैं चाचा के मना करने के बावजूद इस भरी दोपहर में जीप से लखनऊ के लिए चल पड़ा था. घर से निकल कर मैंने पानी के लिए तड़प कर जीप एक पेड़ के नीचे रोक दी. छाँव में उसको खड़ा करके पेड़ की जड़ पर बैठ गया. पसीना, आँधी, तूफान शरीर से बाहर उछल रहा था. जेब से रूमाल निकाल कर मैं उसको पसीने से गीला करने लगा, प्यास की वजह से मुँह सूख रहा था मैं अपनी बेवकूफी पर पछता रहा था कि इतनी धूप में क्यों बाहर निकला और अगर निकला भी तो एक पानी की बोतलभी साथ में नहीं ली. पानी की तलाश में मैंने इधर-उधर देखना शुरू किया, पर मुझे दूर-दूर तक इन्सान तो क्या कोई परिन्दा भी नजर नहीं आ रहा था.

मेरी व्याकुलता बढ़ती जा रही थी, तभी मुझे दूर से एक बैलगाड़ी आती हुई दिखाई पड़ी, मुझे कुछ उम्मीद हुई थी शायद मेरी प्यास बुझने का सबब उस बैलगाड़ी में मौजूद हो. मैंने ध्यान से देखा वो बैलगाड़ी मेरी तरफ ही आ रही थी, मैंने पेड़ के तने से पीठ लगाकर आँखें बन्द कर लीं और बैलगाड़ी के आने का इन्तजार करने लगा.

बैलगाड़ी बहुत धीमी रफ्तार से मेरे करीब आ रही थी. तभी ख्याल आया कि जीप को स्टार्ट करके बैलगाड़ी तक पहुँच जाऊँ, पर मुझे उठने की हिम्मत नहीं हुई, फिर जीप के इंजन की गर्मी भी नाकाबिले बर्दाश्त थी. खैर, मैं बैठकर बैलगाड़ी के आने का इन्तजार करने लगा.

पेड़ की छाँव ने मेरे शरीर को थोड़ी राहत बख्शी थी, मैंने अपनी आँखें वापस बन्द कर ली थी. थकान की वजह से थोड़ी सी सुस्ती भी सवार हो रही थी. जब कानों में बैलों के घुँघरू बजने की आवाज पड़ी तो मैंने आँखे खोली पर तभी मैंने किसी के कराहने की आवाज सुनी जो बैलगाड़ी से ही आ रही थी, कराहने की आवाज यकीनन जनाना थी.

मैं खड़ा हो गया, अब तक बैलगाड़ी काफी नजदीक आ चुकी थी, उसे कोई चौदह-पन्द्रह साल का लड़का हाँक रहा था और बैलगाड़ी में एक लड़की लेटी हुई थी. कराहने की आवाज उसी लड़की की थी, बैलगाड़ी भी उसी पेड़ के नीचे आ खड़ी हो गई थी जिसकी छाँव में मैंने पनाह ले रखी थी.

मैं उठकर बैलगाड़ी के पास जा पाता उससे पहले ही बैलगाड़ी हाँकने वाला लड़का गाड़ी से उतरकर भाग कर मेरे पास आ गया. मैं उठकर खड़ा हो गया था. लड़का मेरे पैरों से लिपट गया था. वो लगभग चीखते हुए बोला, हमारी आपा को बचा लीजिये.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं लड़के के अपने पाँव पर गिरने से परेशान हो गया था. उसे उठाकर खड़ा किया और बैलगाड़ी की तरफ लपका. करीब पहुँचकर देखा तो बैलगाड़ी में एक जूट की बोरिया बिछी हुई थी और उस पर बेहद खुबसूरत सोलह–सत्रह साल की लड़की लेटी हुई थी. लड़के के घबराने के अन्दाज से मुझे लगा था कि लड़की बहुत गम्भीर रोग से ग्रसित होगी, पर अब मैं संयत हो गया था, क्योंकि लड़की की कराहने की वजह और कुछ नहीं प्रेग्नेन्सी की पीड़ा थी.

लड़की की नजर मुझ पर पड़ी तो उसके चेहरे पर थोड़ी सी हया आ गई, दर्द को जब्त करते हुए उसने अपने पेट पर दुपट्टे को सही किया. तपता सूरज सीधे उसके ऊपर था और बेदर्दी से उसके हसीन चेहरे को कुम्हला रहा था. उसके होंठ सूख रहे थे वो दर्द जब्त करने की कोशिश में अपने निचले होठ को बार–बार दाँतों के बीच दबा रही थी. मैंने लड़के की तरफ देखा उसे पास बुलाया और पूछा यह कौन है तुम्हारी दीदी?

वह बोला, हाँ.

कहाँ ले के जा रहे हो.

कासिमपुर अस्पताल.

वो तो अभी काफी दूर है.

बाबूजी आप अपनी जीप से पहुँचाये देव. उस लड़के ने फिर हाथ जोड़े.

मैं बोला, पहले अपनी दीदी को पानी पिलाओ.

वह भाग कर गया और बैलगाड़ी के पीछे, नीचे की तरफ बँधी हुई बाल्टी खोल लाया. मैंने बाल्टी को देखा तो लड़के की बेवकूफी पर गुस्सा आ गया. रास्ते के गड्ढे और बैलगाड़ी की चाल की मेहरबानी थी कि बाल्टी में मुश्किल से एक गिलास पानी बचा था. खैर, मुझे लड़के पर भरोसा नहीं था, इसलिए मैंने बाल्टी खुद ले ली और लड़के से बोला जरा अपनी दीदी को उठाओ और मैंने उस लड़की को पानी पिलाया. मुझे अफसोस था कि बाल्टी में मेरी प्यास बुझाने को पानी नहीं बचा था, पर पता नहीं क्यों अब मुझे वैसी प्यास नहीं सता रही थी जैसी कुछ देर पहले सता रही थी. मैंने लड़के की तरफ देखा, मैंने देखा कि उसकी आँखें याचना कर रही हैं.

मैंने पूछा तुम्हारा नाम?

वसीम. छोटा सा जवाब.

मैंने अन्दर ही अन्दर फैसला किया और बैलगाड़ी से लड़की को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी बाजुओं में उठा लिया और अपनी कमाण्डर जीप के बीच वाली सीट पर लिटा दिया. लड़के से बोला, तुम्हारी आपा को मैं अस्पताल पहुँचाये देता हूँ. तू क्या करेगा.

वह बोला, घर लौट जइयो.

कहाँ है घर.

गुलहरिया गाँव.

खैर, मुझे लगा कि व्यर्थ की देर करना बेकार है, इसलिए मैंने एक नजर लड़की पर डाली और ड्राइविंग सीट पर बैठकर स्टार्ट कर दी और उसे रोड पर लाकर रफ्तार दे दी. लड़की अब भी कराह रही थी. उसकी प्रेग्नैन्सी का ख्यालआते ही मैंने गाड़ी की रफ्तार थोड़ी कम कर दी, क्योंकि हाईवे की तुलना में रोड ज्यादा अच्छी नहीं थी। मैं बीच-बीच में पीछे मुड़कर देखता जाता था लड़की ने सीट में लगी हुई बेल्ट को पकड़ लिया था, मैं उसको सांत्वना देने के उद्देश्य से बोला बस थोड़ी ही दूर है अस्पताल. मेरी बात पर वो इतनी पीड़ा के बावजूद मुस्करा दी. मैंने रफ़्तार हल्की सी ओर बढ़ा दी थी.

कोई पन्द्रह मिनट पर मैं अस्पताल के सामने पहुँच गया था. गाड़ी को अहाते में लगा कर मैं उतरा और लड़की से बिना कुछ बोले भागते हुए अस्पताल के अंदर चला गया. अंदर जाकर मुझे बेहद अफसोस हुआ. पूरे अस्पताल में एक वार्डब्वाय के अलावा और कोई न था. वह वार्डब्वाय मुझे डाक्टर और नर्स के न होने की तफसील समझाने लगा, तो मैं उस पर भड़क कर अस्पताल से बाहर आ गया.

लड़की को देखकर बोला, नाम क्या है तुम्हारा.

वह बोली, परवीन.

परवीन, तुम्हें यह दर्द थोड़ा और जब्त करना होगा, क्योंकि यह अस्पताल, डाक्टर और मरीज दोनों से खाली है.

वो चिंतित हो कर बोली, फिर...!!!

मैं बोला, फिर क्या, लखनऊ चलते हैं.

उसने सहमति में सर हिलाया था और मैंने जीप को अस्पताल से निकाल कर लखनऊ जाने वाले हाईवे पर डाल दिया. मेरी जीप इस समय चिकने हाइवे पर हवा से बातें कर रही थी और मुझे परवीन न जाने क्यों उसके भाई की तुलना में बड़ी जहीन लग रही थी.

खैर, अगले एक घंटे में ही मैं लखनऊ के चौक इलाके में पहुँच गया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था, जहाँ पर मेरे दोस्त आदित्य के बड़े भाई का नर्सिंग होम था. वहाँ पर आदित्य के भाई व भाभी दोनों ही बैठते थे और भाभी तो जच्चा-बच्चा विशेषज्ञ थी, उनका मुझ पर भी काफी स्नेह था.

मैं परवीन को एक बार फिर अपनी बांहों में उठाकर नर्सिंग होम के अन्दर आ गया, मुझे सामने ही नम्रता भाभी दिखायी पड़ गयी, मैं परवीन को स्टेचर पर लिटा कर लपक कर उनके पास पहुँच गया.

वह हैरत से कभी मुझे और कभी परवीन को देख रही थी.

वह मेरी खिंचाई चालू करती, उससे पहले ही मैंने उन्हें पूरी तफसील समझा दी.

बदले में भाभी ने बड़े प्यार से मेरे सर पर हाँथ फिराया था.

मैंने परवीन को उनके हवाले कर दिया था और कोई आधे घंटे में उसने खूबसूरत और स्वस्थ लड़के को जन्म दिया था.

मैं उसे खिड़की से देखकर घर की तरफ जाने के लिए चल पड़ा. हाँ, मैंने भाभी से यह जरूर बोला था कि उसके डिस्चार्ज के समय मुझे इन्फार्म कर दें, साथ ही यह भी रिक्वेस्ट की कि वह उससे कोई पैसा न लें.

अगले दिन शाम को भाभी का फोन आया कि कल सुबह परवीन घर जा सकती है और अगले दिन सुबह मैं नर्सिंग होम पहुँच गया था. भाभी ने उससे कोई पैसा नहीं माँगा था, बल्कि उसे इस बारे में यह बोल कर मुतमईन कर दिया था कि डिलवरी केस के लिए उन्हें एक संस्था से बाकायदा हर महीना पैसा मिलता है. मैंने जब भाभी को पैसे देने चाहे तो उन्होंने मुझे बहुत प्यार से डाँट दिया था और मैं चुप रह गया था.

परवीन इस समय जीप में मेरे बगल में बैठी थी और मैं धीरे से ड्राइव कर रहा था. उसको मैंने ध्यान से देखा यकीनन वह बहुत खूबसूरत थी उतना ही खूबसूरत था उसके गोद में बच्चा.

रेस्टोरेन्ट में मैंने उसे नाश्ता कराया जिसके लिए वह बहुत मुश्किल से तैयार हुई थी. वहीं पर मुझको उसकी तफसील उसी की जबानी मालूम हुई.

वह बहुत गरीब परिवार से थी. उसका शौहर अहमद रोजगार के सिलसिले में दिल्ली में था. उसकी माँ और सास दोनों ही बेहद बूढ़ी थी और चलने फिरने से लाचार थी. ले देकर एक भाई घर पर था. वह जब भी मुझे देखती बहुत ही कृतज्ञ नजरों से देखती. वह दसवीं तक पढ़ी थी और उसमें हर चीज का काफी सलीका था.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे बहुत इसरार पर भी उसने बहुत कम खाया था. हाँ, उस दिन जल्दबाजी में उसके पैसे वसीम के पास ही रह गये थे, इसलिए उसने बहुत लज्जा के साथ केवल बीस रूपये माँगे थे, लखनऊ से उसके घर तक जाने का बस का किराया.

मैंने उसे कैसरबाग बस अड्डे पर उसके गाँव की तरफ जाने वाले बस में बैठाकर टिकट लेकर दिया था जो बीस रुपये का था. मैंने उसे राह खर्च के कुछ रुपये देने चाहे तो उसने सख्ती से मना कर दिया था, फिर न जाने क्यों शायद अपने बच्चे के बारे में सोचकर उसने केवल दस रुपये मुझसे लिए थे.

मैं उसके बच्चे का माथा सहलाकर बस से उतरने लगा तो बोली एक मिनट रुकिए.

मैंने पलट कर उसको देखा तो वह बोली मैं आपके इस एहसान को क्या नाम दूँ.

मैं बोला, कुछ एहसास और कुछ रिश्ते किसी नाम के मोहताज नहीं होते परवीन. न जाने क्यों मेरे जवाब से उसकी आँखें मुतमुईन हो गई थी. वो फिर बोली, पर मैं यह आपके तीस रुपये वापस कर दूंगी. यह रुपये क़र्ज़ हैं मुझ पर.

मैं मजाक के अंदाज मैं बोला, लेकिन कहाँ?

वह बोली वहीं उस पेड़ के नीचे, जहाँ आप फरिश्तों के तरह मेरे लिए आए थे.

मैं मुस्करा कर बस से उतर पड़ा और बस चल दी. मैं धूल उड़ाती जा रही बस को देखता रहा. वह भी खिड़की से सर बाहर निकाल कर मुझे ही देख रही थी. और फिर बस मेरी आँखों से ओझल हो गई.

किसी ने मेरे कन्धे पर हाथ रखे तो मैं चौंक कर पलटा, वह मनोज था. उसने पूछा क्या हुआ?

हाँ !!! मैंने उसे उन सिक्कों के बारे में कुछ नहीं बताया था. वह सिक्के मेरे लिए अनमोल थे, मैं उन सिक्कों के बारे मैं कोई भी मजाक बर्दाश्त नहीं कर सकता था. मैंने उसे टाल दिया था.

मैं गाँव जाकर अगले दिन ही वापस लखनऊ लौट आया और माँ की गोद में सर रख कर उनको पूरी बात बतायी. उन्होंने उस दिन बहुत प्यार से मेरे सर को सहलाया था.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह सिक्के अब तलक मेरे पास हैं, मैं जब उन्हें देखता हूँ तो परवीन मुझे याद आती है. उसने अपना क़र्ज़ उतार दिया था. मेरे दिल से दुआ निकली है वह जहाँ भी हो अपने बच्चे और शौहर के साथ खुश रहे.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुसरो अमीर के बलि-बलि जायें

परी, तितली, राजा-रानी की कथाएँ कभी पुरानी होती हैं क्या?

कभी नहीं, जब सुनो तब नई।

एक जमाने में बुझोपुर में एक राजा था।

बुझोपुर ! शायद उस राज्य का नाम पहले कुछ और रहा होगा पर अब था बुझोपुर।

इसके पीछे भी एक कथा है। राजा था पहेलियाँ बूझने और बुझवाने का बड़ा रसिया। दरबार का राजकाज एक तरफ, सारे दरबारी अफीम के गोले दबा कर बुझनी, बूझने और बुझवाने में मस्त रहते। राजा खुश हो गया तो इनाम से लद जाते। राजा भी प्रसन्न रहता अपनी प्रशंसा और चाटुकरिता सुनकर।

दीवान विजयमान, राजा को समझाने की कोशिश करता पर राजा सुना-अनसुना कर देता विजयमान बना भी तो था नया-नया मन्त्री, होगा बीस-बाइस का नवयुवक जो अपने पिता की मृत्यु के बाद मन्त्री पद पर आसीन हुआ था।

बेचारा विजयमान मन मसोस कर रह जाता। सनकी राजा को सनक सूझी और फरमान जारी कर दिया गया जिसकी बूझनी अबूझ रहेगी, सुकुमारी राजकुमारी, जिसका परस चंदा की चाँदनी और हवाओं की बयार तक को न मिला है, वो उसकी हो जायेगी।

प्रतिरोध तो विजयमान ने किया था और राजा को समझाने का खूब यत्न भी किया था, कि सुकुमारी राजबाला का मन जान लेना चाहिये, पर राजा मूछों पर ताव देते हुए बोला 'जो बोला सो बोला, अब तो ऐसा ही होगा', राजा को लगा कि अपनी बात को पलटने पर उसकी हेठी होगी, हाँ राजकुमारी जो जाती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है रसातल में तो जाये उसकी बला से।

सनकी राजा ने दूसरी शर्त भी तो रखी थी जिसकी बूझनी, बूझ ली जायेगी उन्हें तीन वर्ष तक राजा के लिए पत्थर का काम करना पड़ेगा, वो भी बिना परिश्रमिक के।

राजकुमारी थी ही ऐसी, जिसकी चर्चा दूर-दूर तक थी और नितम्बों और उरोजों के ऊपर तमाम कवि महाग्रन्थ लिख चुके थे। सो अब तो उसे कोई भी हासिल कर सकता था।

राजकुमारी के अनछुए बदन की कामना इतने लोगों को वहाँ खींच लाई थी कि दीवान को उनको ठहराने के लिए रावरी का प्रबन्ध करना पड़ा वो भी इतना कि राज्य मैं तम्बू-कनाते कम पड़ गई। लोग आते, तरह-तरह की बूझनी सुनाते, पर वो अबूझ न रहती। दरबारी उन्हें बूझा देते, और फिर उन्हें लाद दिया जाता पत्थर तोड़ने वाली खादानों के लिये। उन्हें महल में सैनिकों की सुरक्षा में खदानों की तरफ जाते देखकर भी लोगों का जोश कम न होता और उनमें एक-दूसरे से पहले दरबार में पहुँच कर बूझनी सुनाने की होड़ रहती। उन्हें हर पल डर रहता कि कहीं दूसरा कोई बाजी मार के राजकुमारी को हथिया न ले।

संख्या दस-बीस-सैकड़ों और फिर हजार के ऊपर पहुँच गयी पत्थर तोड़ने के लिए, राजकुमारी पाने की हसरत दिल में दबाये लोग आते जा रहे थे ।

राजमहल से दूर एक गाँव में रहता था बूढ़ा माली भोजा, छोटा सा बगीचा, पूरे दिन पेड़-पौधे सींचता, रखवाली करता। रात को भोजन करके चादर तान के सोता, फिर भोर मिनसारे उठकर फूल चुनता और हाट में बेच देता। हाट से आने की बेला वो कुछ न कुछ जरूर लाता अपनी फूल सी बेटी के लिए। जो थी पन्द्रह-सोलह की, छरहरी अल्हड़ कलियों के उनमान और नाम था उसका सुमन।

वो सारे बगीचे में तितली की तरह उड़ती फिरती, हँसती, इठलाती और अपने बापू के हाथ का बनाया खाना बापू के हाथ से ही खाती। ले-दे के दो लोगों का परिवार था, माँ तो सुमन की बचपन में ही गुजर गई थी।

रात फिर दिन और दिन के बाद फिर रात, समय तो निकल जाता है। इधर बूढ़े माली, भोजा को फिकर थी जवान होती सुमन के हाथ पीले करने की और उधर दीवान विजयमान जी जान से रोकना चाहता था राजकुमारी को पाने की ललक में पत्थर की खदानों में जाते लोगों को।

सो दीवान ने दिमाग के घोड़े दौड़ाना शुरू किया पर कोई जुगत न भिड़ी। बहुत सोचा तो दिमाग में घंटी बजी कि सारे फसाद की जड़ राजकुमारी है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सो क्यों न उसे गायब कर दिया जाये, न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी।

महीना था सावन का, राजकुमारी नियम से महल के बाहर देव महादेव के मंदिर जाती थी जल और बेलपत्र चढ़ाने, पूरे महीने तीसों दिन। मन की कामना का तो ठीक-ठाक देव महादेव ही जानें पर सहेलियों की ठिठोली में यही था कि घोड़ो पे सवार किसी खूबसूरत राजकुमार की तमन्ना में राजकुमारी ये नियम पाले बैठी है। ये ठिठोली तब से और बढ़ गई जब से दूर-दराज से लोग बुझौनी के सहारे राजकुमारी के परस को तरसने लगे थे।

पता नहीं देव-महादेव ने राजकुमारी की मन की सुन ली थी या फिर कोई बुझनी पूछने वाला खुन्नस खाए बैठा था, सहेलियों ने तो यही समझा था जब देव-महादेव के मठिया से बाहर निकलते ही, एक सफेद कपड़े वाला राजकुमार जिसकी सूरत भी सफेद कपड़े में छिपी थी ने राजकुमारी को खींच कर घोड़े पर बैठा लिया।

चिल्लाई तो थी राजकुमारी, पहरूये दौड़े थे पर वो सफेद नकाबपोश घोड़े पर राजकुमारी को लिए हवा हो गया। वो सरपट घोड़ा दौड़ाते एक दूर गाँव पहुँचा, वहीं जहाँ भोजा माली रहता था अपनी फूल सी बेटी सुमन के संग।

एक तो जवान होती बेटी की चिंता ले-दे के किसी तरह रोजगार का जुगाड़, ऊपर से ये नई नवेली आफत। आज जो भोजा पहुँचा बगीचे में तो पाया एक पकरिया के पेड़ के नीचे एक थका हारा युवक सफेद कपड़ों में, जो अब माटी लगने से मैले कुचैले हो चुके थे। उसके साथ ही पकरिया की जड़ पे बैठी थी हीरे जवाहरात से लदी मेनका की उनमान बाला। साथ ही खड़ा था कत्थई रंग का घोड़ा।

जब सफेद जिन्न ने राजकुमारी का अपहरण किया तो वो बहुत घबराई, रोई-चिल्लाई पर राजकुमारी के दिल से तब डर निकल गया जब छीना झपटी में जिन्न के सर से मुँह तक बँधा साफा खुलकर जमीन पर गिर गया, वो तो बाँका जवान दीवान विजयमान था।

राजकुमारी ने अपना अंग-अंग, दीवान की बांहों में ढीला छोड़ दिया और आँखे मूंद के अचेत हो गई, वो भी पहले से ही दिल ही दिल में दीवान पर मरती थी, सो आज देव महादेव की कृपा से वो घड़ी आ गई, सो राजकुमारी ने सोचा क्यों न दीवान की मजबूत बांहों और सख्त छाती का आनन्द घोड़े की पीठ पर लिया जाये।

देहाती भोजा इस राजसी जोड़े को देखकर अचकचा गया, उससे कुछ बोलते ही न बना। सो दीवान खुद उठा और उसने हाथ जोड़ के भोजा को प्रणाम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया। कोई राजकुमार के उनमान आदमी उसे हाँथ जोड़े ये बात तो भोजा के लिए सदेह स्वर्ग जाने जैसी होगी।

वो तुरंत हाँथ जोड़ के बोला 'अन्नदाता काहे हाथ जोड़ के जिन्दा नरक मैं ढ़केलत हो।' आप तो माई बाप हैं हमार।

माथा ठनका दीवान विजयमान का, लगा जो इस देहाती ने पहचान लिया होगा सो एक अलग मुसीबत। सो बात बनाते हुए आदर से बोला। नहीं काका वो क्या हुआ मैं अपनी दुल्हन का गौना लेकर आ रहा था। रास्ते में एक बारहसिंगा का जोड़ा क्रीड़ा में लगा था सो मैं लजवंती दुल्हन की लाज दूर करने लिए तनिक जोरपूर्वक उसे वहाँ ले गया। अभी मैं क्रीड़ा दिखाने के लिये नवेली की ठोड़ी को हथेली से ऊपर उठाया ही था, कि न जाने कहाँ से मधुमक्खी की नई ड़कैती की फौज आ झपटी सो दुल्हन को झटपट घोड़े पे बैठाकर वहाँ से सरपट निकला। वहाँ से जो निकला सो यहाँ आकर रूका। बाकी पीछे क्या हुआ सो वो देव महादेव जानें। सोचा कुछ देर सुस्ता के निकल जायेंगे।

दीवान अपनी बनाई आप बीती सुना ही रहा था कि भोजा की छोरी सुमन भी वहाँ आ गई, और उसकी आँखे बारहसिंगों के संग क्रीड़ा की बात सुनकर लॉज से नीचे गई, और यही हाल राजकुमारी का भी हुआ।

सो भोजा कुछ सोचकर उस जोड़े को मिट्टी के बने घर में ले आया और हाय रे देखो किस्मत, वो राजकुमारी जो रात को निकले तो सखियाँ चँवर डुलाये, पाँव रखे तो भी मखमल के ऊपर और आज वही सख्त जमीन पर बिना किसी वैभव के चल रही थी।

दीवान और राजकुमारी दोनों के शरीर पर ढेरों जवाहरात थे सो उसने उनको किया भोजा के हवाले और बात बनाई वो अपने मुल्क जाकर देखेगा वहाँ सब ठीक है तभी अपनी पत्नी को ले जायेगा। सो एक दिन वो राजकुमारी को वही छोड़ रात के अंधेरे में रूखसत हुआ।

उधर दीवान गया और इधर माली की लड़की सुमन एकाँत जानकर पहुँची राजकुमारी के पास, और राजकुमारी का हाथ अपने हाथ में लेकर बोली, क्या कह कर बुलाऊँ तुम्हें। सो राजकुमारी बोली बड़ा उपकार है तुम्हारा जो ऐसे वक्त में हमें आश्रय दिया सो हम बहनें हुई, सहेली बनीं आज से, और तू लीला कह के बुला मुझे क्योंकि यही नाम है मेरा। सो दोनों सहेलियाँ गले मिली, साथ भोजन किया और साथ सोई। अगले दिन लीला और सुमन दोनों बगीचे में टहल रही थीं सो सुमन ने एक पौधे को दिखाते बोली आज इस पर फूल लगा है सात रंगों वाला वो साल में एक बार आता है, और वो इसे किसी को नहीं देती। इतना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कह कर सुमन आगे बढ़ गई पर लीला फूल की सुन्दरता देखकर वहीं खड़ी रह गई, उसे यूँ देखकर सुमन ने पूछा क्या हुआ सो लीला कुछ न बोली। उसके मन की जानते हुए सुमन ने वो सतरंगी फूल तोड़ कर लीला के हाथ में देती बोली उदास न हो, जो मेरा है वो सब तेरा। लीला भी अपने गुलाबी होठों पर बच्चों जैसी नई हँसी लाते बोली जो मेरा है वो भी सब तेरा। सो सुमन ने मालूम नहीं ठिठोली की या नहीं पर बोली तो फिर तेरा पति भी। उसकी बात पर लीला ने होठों से नहीं आँखों से सहमति दी। फिर दोनों सखियाँ न जाने कितनी देर गले लग के खड़ी रही।

सात दिन बीते और इन सात दिन में लीला और सुमन पक्की सहेलियाँ बन चुकी थी, राजकुमारी और किसान की दोस्ती। सातवें दिन दीवान वापस आया और फिर भोजा को नई कहानी सुनाई–

उसके घर में कोई न बचा सबको ड़कैतों ने लूट कर मार दिया और जो घर में बचा था, वह वो साथ ले आया।

साथ लाये माणिक, पन्ने हीरे–जवाहरात देखकर भोजा की आँखें खुली की खुली रह गई। सो दीवान की पीठ पर हाथ सहलाते बोला, इसे अपना ही घर समझो जब तक चाहो आराम करो।

अन्धे को क्या चाहिए दो आँखे, सो दीवान वही जम गया।

बड़े जतन से सुमन ने रनिवास तैयार किया, सुहाग सेज सजाई और एक पहर रात ढ़लते ही दीवान के पास लीला को पहुँचा दिया।

दीवान को अपनी तरफ बढ़ते देख–लीला बोली आपने मेरा अपहरण किया सो ठीक यहाँ लाये सो वो भी ठीक, पर ये कोई तौर न होगा जब तक मैं व्याहता नहीं बन जाती।

सो दीवान उसे कुछ समझा पाता, उससे पहले ही वे किवाड़ खोल बाहर निकल आई। घर से बाहर निकल कर देखती है कि सुमन चमकते चांद के उजास मैं टहल रही है। लीला को यूँ बाहर देख कर भाग कर सुमन उसके पास आई, और उसका यूँ रनिवास से बाहर आने का कारण पूछा सो लीला बोली– मेरी प्यारी सहेली सुन, मेरे पति पर तेरा भी हक सो आज की पहली रात तुझको ये तेरी सहेली की भेंट हैं।

यूँ सुमन सकुचाती–लजाती कुछ न बोली और लीला ने आनन–फानन अपने बदन से सुहाग का जोड़ा उतार कर उसे पहना दिया, और उसकी कोमल कलाई पकड़ कर रनिवास के अन्दर ढ़केल दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दीवान विजय मान ने सुहाग जोड़े में लिपटी मालिन को सुहाग सेज पर लेटा दिया और वो मालिन सुमन भी उसकी चैड़ी छाती में दुबक गई। विजय मान के तूफान का सामना उसने पीड़ा और सिसकारियों के साथ किया। फिर विजय, सुमन के उरोजों पर सर रख के सो गया और सुमन भी तृप्ति को प्राप्त कर सुख के साथ सो गई।

यूं अगले दिन लीला ने सुमन से सुहागरात का किस्सा पूछा तो लजाते हुए सुमन ने दास्तान बयाँ कर दी और जब सुमन ने शरारत से उसके गाल पर चिकोटी काट के बोली अब तेरी बारी है री लीला, तो उसने सहमति में आँखे झुका ली।

यूँ दोनों सहेलियों ने एक पुरूष बाँट लिया और दोनों ही उसकी व्याहता न थी हर दूसरी रात एक सहेली दीवान के साथ सोती और फिर अगली रात–दूसरी।

यूँ वक्त गुजरा और गुजरे वक्त के साथ सुमन की कोख पहले फली और पूरनमासी की चमकते चाँद की रात में चाँद के ही उनमान एक बच्चे को उसने जन्म दिया। यूँ भोजा माली की झोपड़ी बच्चे की किलकारी से गूँज उठी और भोजा ने भी मन में पत्थर रख के इसे किस्मत का खेल समझकर कबूल कर लिया।

इधर ये बच्चा चन्द्रमा की कला के उनमान बढ़ने लगा, उधर सनकी राजा, बेटी के अपहरण से क्षुब्ध उसे ढूँढ़ने के लिए दिन रात एक किये बैठा था।

रात दिन पहरूऐ गिद्ध–चील के जैसे दीवान को खोजते फिरते थे और यूँ एक दिन वो उस गाँव तक पहुँच गये जहाँ दीवान, लीला के साथ आश्रय में था।

आज लीला की कोख फले पाँच महीने पूरे हुए थे सो एक छोटी सी दावत थी। सजी–धजी सुमन और लीला चहक रही थीं, सुमन की गोद में उसका डेढ़ साल का बच्चा अजय था। भोजा आने वालों की तीमारदारी में जुटा था। सो तभी वहाँ पहरूऐ आ पहुँचे और बात ही बात में दीवान को हथकड़ी एवं बेडियों से जकड़ दिया। सुमन के पास से लीला को खींच लिया। भोजा आगे बढ़ा प्रतिवाद को तो उसके सीने खंजर पैवस्त हो गया, वो वहीं तड़प कर ढ़ेर हो गया।

भोजा का हाल देख कर सबको सांप सूंघ गया फिर कोई आगे न बढ़ा और पहरूऐ दीवान और राजकुमारी, राजसी कैदियों को बांधकर आनन–फानन रूखस्त हो गये।

इधर अकेली रह गई सुमन अपने बच्चे के साथ रोती तड़पती और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उधर लीला को राजसी रनिवास में ढ़केल कर अगले ही दिन दीवान विजय मान को तुरन्त बिना किसी सवाल–जवाब के सनकी राजा ने सूली पर चढ़वा दिया।

यूँ दो नारियाँ जो व्याहता न थीं फिर भी एक साथ विधवा हो गई पर उन्हें जीवित रहना था, एक को अपने गोद में खेलते बच्चे के लिए और एक को अपनी कोख में पलते हुए बच्चे के लिए।

लीला और सुमन दोनों आँसू बहाती रहती एक महल में और एक झोपड़ी में।

वक्त की चाल कब ठहरी है, कब ठहरेगी, वो निर्बाध चलता रहा है, चलता रहेगा। सो जब वक्त पूरा हुआ पूरे नौ महीने नौ दिन अपनी कोख में रखने के बाद राजकुमारी लीला की कोख से एक सुन्दर कन्या का जन्म हुआ।

इधर माली अजय अपनी माँ सुमन के साथ बगीचे में खेलते हुए बड़ा हो रहा था और उधर वो बच्ची जिसका नाम रखा गया था मीनाक्षी वो बड़ी हो रही थीं अपनी माँ लीला के साथ महलमें।

यूँ बात ही बात में सोलह सावन बीत गये और वो राजकुमारी मीनाक्षी सच उर्वशी की नई चटक कर कली से फूल बनने की राह पर थी। सारे राज्य में उसकी खुबसूरती के कसीदे गढ़े जाते थे।

इधर अजय अब सत्तरह साल का बाँका जवान हो चुका था, वो जिधर से निकलता उधर की सारी युवतियाँ ठण्डी आह भर के रह जाती।

वक्त बदला, बच्चे, जवान हो गये, जवान बूढ़े हो गये और बूढ़े परलोक सिधार गये। नहीं बदला अगर कुछ, तो वो थी उस सनकी राजा की सनक।

इस बार भी वही शर्त थी जो राजकुमारी लीला के वक्त थी, बस फर्क इतना था कि इस बार पहेली वाले के साथ फेरे पड़ने थे राजकुमारी मीनाक्षी के।

लोग आते पर हार जाते और भेज दिये जाते पत्थर तोड़ने के लिए। धीरे–धीरे ये खबर पहुँची वहाँ जहाँ अजय रहता था सो उसने भी किस्मत आजमाने की सोची और चल पड़ा राजधानी की तरफ।

चकाचैंध देखकर दरबार की एक बार तो वो चकरा गया था, एक से एक दरबारी मूछों पर ताव फेरते जांघों पर तलवार रखे, नाचती पतुरिया और सबसे ऊपर सिंहासन पर बैठा था वो सनकी।

सो शुरू हुआ वो बूझनी का दौर।

अजय ने एक से एक कठिन बूझनी पूछी पर किसी न किसी ने उसे हल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर दिया सो हार कर अजय ने वो पूछा जो उसकी माँ उसे लोरी सुनाते हुए गाती थी और जिसका हल खुद अजय को मालूम न था।

उसने पूछा–

'भैंस चढे बबूल पर लप–लप गूलर खाए'

सारे दरबारी एक–दूसरे का मुंह ताकने लगे, सबने बहुत कयास लगाये पर सब निष्फल।

सुबह से शाम हो गई पर बूझनी अबूझ की अबूझ रही, सो थक कर राजा ने पूछा– ऐ लड़के तू बता इसका मतलब।

सो हाथ जोड़ कर अजय बोला–महाराज, शर्त में यह तो शामिल न था कि हल बताना जरूरी है। सो उसकी बात सुन वो सनकी राजा निरुत्तर हो गया।

बड़ी धूम–धाम से राजकुमारी मीनाक्षी के फेरे अजय के साथ हुए। यूँ बाँके युवक अजय को देखकर मीनाक्षी ने अपने भाग्य को सराहा उस पर गर्व किया।

रनिवास में, सुहाग सेज पर लजाती बैठी थी मीनाक्षी जब वहाँ अजय पहुँचा अपनी नई नवेली दुल्हन के साथ सुहागरात मनाने।

घूँघट उतार कर उसका अजय ने उसके अधर चूमते हुए उसे सुहाग सेज पर लिटा दिया।

उधर महल से सट कर बरगद के पेड़ पर बैठे चकवी ने चकवे से बोला 'देखो कैसा अन्धेरा है एक ही बाप के जाये आज शय्या सहचरी हैं'।

चकवा बोला ये तो रीत है–

ये कैसी रीत चकवी तनिक तमक कर बोली।

चकवा उसे समझाता बोला, देख महल के रनिवासों में यहीं होता आया है, अरे बाप अपनी जायी के साथ सोता है ये तो फिर भी गनीमत है।

चकवी बोली वो ठीक है पर उस बूझनी का हल क्या है

चकवा बोला उसका हल तो खुद उसको लिखने वाले अमीर खुसरो को भी मालूम नहीं था, सो किसी और को क्या होगा।

चकवी बोली, चलो अच्छा हुआ इससे पत्थर तोड़ने वालों की जान तो छूटी।

चकवा चहक कर बोला हाँ– 'खुसरो अमीर के बलि बलि जायें'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देवयानी

देवयानी, देवयानी ... शायद दो तीन बार मेरे होठों ने ये नाम दोहराया था। सच, मन्नत का धागा बाँधते हुये मेरा हाथ उसके हाथ को स्पर्श कर गया था, उसको क्या महसूस हुआ ये मालूम नहीं, हाँ मेरे शरीर में जरूर हरारत बढ़ गयी थी।

सिर्फ निगाहें ही चार हुई थी मैं कुछ बोलता या पूछ पाता कि एक अधेड़ औरत 'जल्दी करो देवयानी' का सुर अलापते हुए आ धमकी और वो उसके साथ निकल गई थी, जाते हुए पलट कर देखना उसे शायद गवारा न था।

खैर उसके नाम का रस मेरे कानों में पड़ गया था और मैं मंदिर में ओम नमः शिवायः मन्त्र के स्थान पर देवयानी का राग अलाप रहा था। और वो, वो तो फुर्र हो गई थी, लाख ढूँढने पर भी मैं दूसरी बार उसके दर्शन ना कर सका था।

दर्शन तो मैं उसके बाद में किसी के भी न कर सका था। इन किसी में मंदिर में स्थापित वो सैकड़ों देवी-देवता भी थे। सच मेरा मन तो सिर्फ एक देव या यूँ कहिए देवी में लग गया था। जिसका नाम था देवयानी।

बेमन, हाँ बेमन ही तो घूम रहा था मैं मेले में, मन तो मेरा देवयानी ले गई थी। मेरे सारे दोस्त मेले का भरपूर लुत्फ उठा रहे थे और मैं केवल उनकी हाँ में हाँ मिला रहा था।

अचानक मेरी आँखों में चमक आ गई थी। हाँ वो मुझे नजर आ गई थी। हाँ वो देवयानी ही थी। वो ट्रैक्टर की ट्राली में बैठी थी। उसके चारों तरफ अन्य लड़कियाँ और औरतें बैठी थीं पर वो लम्बे कद की वजह से मुझे नजर आ गई थी।

इतना साहस शायद इससे पहले मैंने जीवन में नहीं किया था। मैं उसके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ट्रैक्टर के पास पहुँच गया और मडगार्ड पर पैर रखकर ट्राली पर खड़ा हो गया था, खिलखिलाती देवयानी की नजर मेरी नजर से टकरा गई थी, नजर मिलते ही मैंने कहा था देवयानी तुम्हारा गाँव कौन सा है, हँसती देवयानी एकदम से शाँत हो गई थी। हाँ उसकी नजरें अब भी मुझसे याद हैं, कम से कम बीस लड़कियों को मैंने आवाज दी। तभी देवयानी के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगी थी। मेरा पूरा ध्यान शायद मंडली के चाँद से चेहरे पर था, तभी तो बाकी लोगों पर ध्यान ही नहीं गया था।

शायद उसने मेले से ही वो बेलन खरीदा होगा, वो खड़ी हुई तो लहीम सहीम औरत थी, मेरी तरफ बेलन तानते हुये बोली थी आ मैं बताती हूँ उसके गाँव का नाम।

अगले सेकेण्ड मैं ट्राली से कूद कर सड़क पर था और भागकर भीड़ में छिप गया था। हाँ उस भीड़ से ही में देवयानी के चेहरे का रस पीता रहा था तब तक जब तक वो ट्रैक्टर वहाँ से रूखसत नहीं हो गया था।

उस टैक्टर के साथ रूखसत हो गई थी देवयानी और देवयानी के साथ रूखसत हो गई थी मेरे होठों की हँसी और दिल का चैन।

उसके झील के मानिंद गहरी आंखें, कंधे पर झूलते घटाओं को मात देते गेसू, वो सुर्ख लब, वो हिरनी को लज़ाती लाज, वो मंदिर की घंटियों को शिकस्त देती आवाज, हिमालय की चोटियों से प्रतिस्पर्धा करते यौवन शिखर और केसर की क्वारियों को पीछे छोड़ती उसके बदन की महक।

मेरा रोम-रोम देवयानी के रूप पाश में बँध चुका था और वो मेरे मन का हरण करके अपने लोक को चली गई थी।

वो जिस तरह मिली थी उसी तरह लोप हो गई थी, मेरा जीवन ठहर गया था नहीं ठहरा तो वो था वक्त जो अपनी चाल से हमेशा चलता रहा, और चलता रहेगा और उसकी गर्दिश में सृजन और प्रलय दोनों खेलते रहते हैं।

मेरी प्रेम कहानी शुरू होने से पहले ही खत्म हो गई थी और शायद हाँ शायद क्या यकीनन मैं इक तरफा मोहब्बत की कहानी थी। खैर उस दिन के बाद जब कभी मुझे कोई लाल रंग का स्वराज टैक्टर दिखता तो मैं अपनी बाइक से उसका पीछा करते हुए उसके गाँव तक जरूर जाता था और फिर तमाम दिन मैं उसी गाँव में किसी न किसी बहाने से रूककर उसके दीदार की कल्पना करता परंतु अंतिम नतीजा सिफर निकलता।

भादो का महीना आ गया था, ये वही महीना था जिसके दूसरे पखवारे गाँव में वार्षिकोत्सव होता है। भादो लगते ही गाँव के छोरे सजने इठलाने लगते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है, छोरे ही क्यों गाँव के बूढ़ों पर भी रंग चढ़ जाता है और वो पान से मुँह लाल किए इधर-उधर गलियों में पीक थूकते इतराते घूमते हैं।

गाँव के लोग ही क्या दूसरे गाँव के लोग भी रिश्ते नातेदारों के यहाँ आकर दस-बारह दिन डेरा डाल देते है और धोती का एक कोना हाथ में पकड़ गाँव के गली- बाजारों में घूमते फिरते हैं। अभी तो लड़कों पर नये दौर का फैशन चढ़ गया है और जींस व टीशर्ट पहनकर एक दूसरे से अधिक स्मार्ट बनने की कोशिश करते हैं।

न जाने कितने लोग दूर-दूर से करतब दिखाने आते है, सर्कस, झूले और नकल विविध तरह के मनोरंजक कार्यक्रम होते हैं। गाँव के हर नुक्कड़ पर रात होते ही नौटंकी और ड्रामा का स्टेज सज जाते है, जिन पर पहले हाफ पतुरियों का डाँस होता है और दूसरे हाफ मैं अमर सिंह राठौर, पूरनमल जैसे ना जाने कितने किस्सों का मंचन होता हैं।

इस बार तो आस-पास के हर गाँव की पतुरियाँ आई हुई थीं। एक से बढ़ कर एक हसीन और गाने में उस्ताद, पर गाँव में चर्चा थी एक पतुरिया की जो बामुश्किल पंद्रह साल की बताई जा रही थी और लोग कह रहे थे कि ये उसका पहला मुजरा होने वाला है। उसके बारे में सुनकर उसे देखने और उसका मुजरा देखने की ललक मेरे अंदर भी बढ़ गई थी।

जहाँ-जहाँ गाँव में पतुरियों के रूकने की व्यवस्था की गई थी वो हर जगह मैंने अपने मित्रों के साथ खँगाल डाली थी। पर अभी तक वो मुझे कहीं दिखाई नहीं दी थी। मैं हर जगह पतुरियों का नाच देख रहा था पर वो कहाँ थी क्या मालूम, मेरी बेताबी बढ़ती जा रही थी।

उस शाम को मेरी खुद की कोठी के एक हॉल की साफ-सफाई चालू थी, सोफे टेबल हटा कर वहाँ, जमीन पर ही गद्दे बिछाये जा रहे थे और उन गद्दों के ऊपर लक-दक सफेद चादरें हॉल के आधे पोर्शन में गद्दों के ऊपर सफेद चादरें बिछा कर मसनद लगा दिये गये थे। और आधे पोर्शन में मखमली कालीन बिछा दिया गया था। फानूस रोशनी से सजा दिए गए थे।

इन सब की देख-रेख खुद मेरे चाचा जी कर रहे थे। पानदानों की सफाई करके वापस करीने से सजा दिया गया था। पूरे हॉल में सम्मोहन इत्र का छिड़काव कर दिया गया था। शाम ढल चली थी, ये सब मैं बहुत ही चोर नजरों से देख रहा था और भरसक कोशिश कर रहा था कि चाचा जी की नजर मुझ पर ना पड़े।

हल्का अँधेरा होते ही कोठी में साजिंदे आने लगे थे। मेरे कुछ दोस्त भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आ गए और मैंने भी उन पतुरियों का नाच देखने के लिए एक और बंदोबस्त कर लिया था। उस हॉल से सटे कमरे के ऊपर एक और कमरा था और उस कमरे में उस हॉल का एक रोशनदान खुलता था। कभी वो हॉल का रोशनदान रहा होगा, पर बाद में कोठी में और कन्सट्रक्शन हुआ तो वो रोशनदान उस कमरे की दीवार में आ गया। आज उसी को हमने खोल लिया था।

हमारी पूरी मित्र मण्डली धीरे-धीरे उस कमरे में इकट्ठी हो गई थी। साजिंदों के बाद फियेट गाड़ी से वो पतुरियाँ आई थी चार-पाँच होगी। उनमें से एक यकीनन पन्द्रह वर्ष की होगी उसके चेहरे पर उसके दुपट्टे का नकाब था, चेहरा नजर नहीं आया, बाकी के चेहरे दिखाई दिये। एक से बढ़ कर एक खूबसूरत। वे सब सीधे उस हॉल से सटे कमरे में चली गई थी। जिसका एक दरवाजा उस हॉल में खुलता था। इन्हें शायद रक्स से पहले उस कमरे में इसलिए रखा गया था ताकि वो नाच के वक्त अपनी अदाओं को बिखेरने के लिए अपना साज श्रृंगार कर सके।

हल्का, अँधेरा होते ही हॉल से तबले, ढोलक और हारमोनियम की आवाज आने लगी थी। इस आवाज के आते ही हम उस चोर दरवाजे के पास जमा हो गये थे। घूँघट की आवाज के साथ होठों से फूटती सुरीली आवाज भी अब कानों से टकराने लगी थी।

वो अभी तक चेहरे पर नकाब डाले थे। एक पतुरिया एक मनसद के सहारे बैठी गीत को स्वर दे रही थी। मैं उसे पहचानता था वो माला थी और उसकी आवाज पर साजिंदे अपने वाद्ययंत्रों पे थाप दे रहे थे।

माला की स्वर लहरी और साजिंदों के संगीत पर एक पतुरिया अपने नृत्य का प्रदर्शन कर रही थी। मैं उसे भी पहचानता था वो नर्गिस थी। मसनद के सहारे बैठे थे, मेरे चाचा जी, गाँव प्रधान और अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति।

ज्यों-ज्यों रात ढ़ल रही थी। या यूँ कहो जवान हो रही थी, खूबसूरत पतुरियों से सजी उस महफिल की रौनक बढ़ती जा रही थी। उस कमसिन को छोड़कर सभी अपने हुनर की नुमाईश कर चुकी थीं। ठर्रे और महवे को पीकर उनके हुनर के प्रशंसक भी मस्त हो रहे थे। अब बारी उसकी थी। वो उठी, पहले उसने अपनी सभी पतुरियों को सलाम बजाया फिर दर्शकों को, शायद इसका अभ्यास वो पहले से करके आई थी। मेरे चाचा जी एवं अन्य सँभलकर बैठ चुके थे। और सँभल के तो हम लोग भी बैठ चुके थे।

मशहूर तवायफ माला ने ही उसके रक्स को स्वर दिये थे। साजिन्दों के हरकत में आते ही उसने नृत्य आरम्भ कर दिया था, सच मैंने मेनका, उर्वशी का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नृत्य तो नहीं देखा पर यकीनन मैं उससे हरगिज कम तो नहीं था तो उसने मेरे चाचा और प्रधान के आगे उसने अपने दुपट्टे को बड़ी अदा से हटाया था और झुक कर उन्हें सलाम किया था।

हजारों बिजलियाँ एक साथ मेरे मासूम दिल पर गिरी थी। मैं उसे उम्र के किसी भी पड़ाव में, किसी भी हाल में, किसी भी वक्त पहचान सकता था।

वो देवयानी थी हाँ देवयानी जिसे पिछले एक साल से पागलों की तरह मैं ढूँढ़ रहा था। उसके आगे उसका नृत्य देखने की ताकत मेरे अंदर कतई न थी, मैं वहाँ से निकल गया था। हाँ मेरे दोस्त उसका रक्स देख रहे थे जुमले कस रहे थे और वहाँ हाल में न जाने कितने लोग पतुरिया को हवस की नजर से देख रहे थे।

पतुरियों के नाच तो क्या गाँव के हर रंगारंग कार्यक्रम से मेरा मन उचट गया था मेरा किशोर मन इस आघात से सदमे में था हाँ मेरी आयु भी थी सोलह-सत्रह ही थी। मैंने देवयानी से मिलने का फैसला कर लिया था। किसी भी तरह किसी भी कीमत पर।

तमाम रात मेरी आंखों में कटी थी, वो यकीनन थी तो देवयानी ही पर एक पतुरिया ये मेरा दिल मानता न था और अगर वो पतुरिया थी तो भी मैं अपने प्यार का इजहार करने वाला था जो मैं एक साल पहले उसे मेले में न कर सका था। अगले दिन मैं सारे ठिकाने ढूँढ़ रहा था। सुबह से शाम हो चली थी पर मैं उसे ढूँढ़ने में नाकाम रहा था। शाम के वक्त मैं निराश घर वापस आया था।

शायद एक ही दिन में पिछले एक साल की उसकी जुदाई मेरे चेहरे से दिखने लगी थी। जिसे मेरी भाभी समझ गयी थी। मेरे कुछ न कहने पर भी उन्होंने अंदाजा लगा लिया था, मेरा किशोर मन इश्क की गिरफ्त में था पर किससे ये वो जान न सकी थी और मैं उसके बारे तो हरगिज बताने वाला न था।

भाभी के बहुत कहने पर भी मैंने खाना नहीं खाया था। सच इन हालात में मेरे गले के नीचे कुछ भी कैसे उतर सकता था तो उन्होंने मेरे हाथों में आग्रह पूर्वक चाय का प्याला पकड़ा दिया था। मैंने भी मना न किया था और चाय के घूँट भरते हुये अनजान उस कमरे में पहुँच गया था जहाँ कल देवयानी और अन्य पतुरियाँ आकर ठहरी थी।

कोई घुटने पर सर रखकर सोफे के एक कोने मैं बैठा था, कोहनी तक दोनों हाथों में चूडियाँ। लाल चुनरी उसके बगल में सोफे पर पड़ी थी और उसी रंग का लहंगा चोली उसके बदन पर था, चोली कई जगह से मसकी हुई थी, बाल बेतरतीब कन्धे और पीठ पर बिखरे हुये थे। बगल के पलंग पर सिमटी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चादर, कुचले फूल और टूटी काँच की चूड़ियों के टुकड़े, अजब मंजर था उस वक्त हमारी कोठी के उस कमरे का।

दरवाजा खुलने की चरर्र की आवाज से भी उसकी हालत पर कुछ असर न हुआ और कमरे में कौन आया ये जानने को भी उसने अपना सर नहीं उठाया था। इतना मैं समझ चुका था कि वो जो भी है अपना सब कुछ लुटा कर बैठी है। चाय का प्याला मैंने वही पास रखी एक तिपाई पर रख दिया था।

कौन हैं आप–मैंने माहिम आवाज में पूछा था।

बिना सर उठाये ही वो बोली थी–पतुरिया, पर तुम अकेली... बाकी कहाँ है

मेले में नाचने को गई है

तुम नहीं गई

मेरी नथ उतराई जो हुयी है, वो चेहरा उठाते हुये बोली थी।

झटका खाकर मैं दो कदम पीछे हट गया। वो देवयानी थी।

लड़खड़ाते स्वर में बोला था मैं–तुम देवयानी... ये क्या बोल रही हो।

वो मेरे चेहरे को गौर से देख रही थी। शायद पहचानने की कोशिश कर रही थी। कुछ लम्हों बाद उसके चेहरों पर खुशी और अवसाद का भाव एक के बाद एक तुरन्त आया था।

वो उठ कर खड़ी हो गई थी। उसके गुलाबी होठों पर पपडियां जम चुकी थी। आँखे सूजी हुई थी शायद वजह रात भर जागना रहा होगा। चेहरों पर जहाँ तहाँ खरोचों के निशान थे और उसकी कमर बाँहों और कई जगह नीले निशान पड़े हुये थे जो इस बात की गवाही दे रहे थे कि उसकी नथ उतराई की रस्म कितनी बेदर्दी से की गई थी।

वो बोली थी, आप वहीं है न जो उस दिन मेले में मुझसे मेरे गाँव का नाम पूछ रहे थे।

मैंने केवल सर हिलाकर हाँ कहा था, होठ मेरे खामोश रहे थे।

आप इसी गाँव में रहते है–उसने वापस पूछा था और मैंने केवल सर हिला कर ही उत्तर दिया था, होठ मेरे अब भी खामोश थे।

इसी कोठी में ... उसने फिर से पूछा था।

मेरी प्रतिक्रिया वही थी–होठ खामोश और सर को हाँ के इशारे में जुम्बिश।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देख वो मेरी तरफ ही रही थी, मैं भी उसी को निहार रहा था। न जाने कितने लम्हें हमारे बीच मूक संवाद हुआ था, आँखों से आँखों के बीच न जाने कितने पल बीत गये थे। पहली बार इसी के होठ हिले थे।

हाय री मेरी किस्मत मैं उसी गाँव उसी गली मैं पहली दफा लुटी जो मेरे मन मंदिर के देवता से वाबस्ता थी।

मैं खामोश खड़ा सुन रहा था, और वो बोल रही थी-आपने उस दिन जो हिम्मत दिखाई, अगर मैं भी थोड़ी हिम्मत करती और अपने गाँव का नाम बता देती, तो शायद आपका प्यार मुझे हासिल हो जाता।

मैं पहली बार बोला था, उसके थोड़ा नजदीक आकर। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ देवयानी।

तुम्हें शायद मालूम नहीं मेरे साथ क्या हो चुका है।

जानता हूँ।

फिर भी ...

हाँ

कितनी अभागिन हूँ मैं आपका नाम तलक नहीं जानती।

जो चाहो नाम दे दो

नाम तो पैदा करने वाले देते है, दिया होगा, मुझे वही नाम जानना है।

आदित्य ठाकुर

उसने मेरा नाम सुन के अपने दोनों कानों पर हथेलियाँ रख ली थी।

वो लगभग चिल्लाई थी.........नहीं............

मैंनें उसके थोड़ा करीब आकर पूछा था, क्या हुआ देवयानी

वैसे ही कानों पर हाथ रखे हुए वो बोली थी भगवान के लिए अपने नाम के साथ ठाकुर मत बोलो, मुझे घिन आती है इस शब्द से।

मैं उसका मतलब समझ गया था, बोला

ऐसा ही होगा

ठीक है आदित्य अब तुम जाओ

नहीं मुझे अपने पास बैठने दो देवयानी

नहीं आदित्य अब रात को चौक में आना मेरा मुज़रा देखने के लिये।

मैं कुछ बोलता उससे पहले ही उसने हाथ जोड़ दिए थे। आँसू की दो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बूँद छलक कर गालों को गीला कर गई थी।
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जी किया था आगे बढ़ कर उन आँसूओं को पोछ दूँ पर जाने क्या सोचकर मैं दरवाजे से बाहर आ गया था।

अपनी तकदीर पर मुझे कभी हँसी तो कभी रोना आ रहा था। दिल ने जिसे प्रेयसी बनाना चाहा या यूँ कहों मान लिया था। आज मेरे ही गाँव में सरेआम मुजरा करने वाली थी और गाँव के दिलफेंक नौजवान, नौजवान ही क्यों नम्बरदार भी उस पर फब्तियाँ कसेगें और मैं विवश मजबूर लाचार सिर्फ देखता रहूँगा।

पर एक बार मन में आया मैं क्यों जाऊँ वहाँ पर जहाँ देवयानी, मनचलों के आगे उन्मुक्त नाच करने वाली है, पर अँधेरा घिरते ही मैं चौक पहुँच गया था। रक्स का मंच सज चुका था। साजिंदे कालीन पर अपने वाद्ययंत्रों के साथ बैठ चुके थे। नाचे जाने वाली जगह पर कालीन बिछाया गया था।

माला के रक्स के बाद, देवयानी उठी थी और दर्शकों को जौहार करके उसने नाच शुरू किया था। घूँघरू की छमछम मेरे कानों में पिघले शीशे की तरह पड़ रहा था। उसके गीतों को स्वर दिया मशहूर तवायफ नर्गिस ने।

तुम हमको पिलाओ तेरे घर आके पियेंगे।

झूमेंगे ग़ज़ल गायेंगे लहरा के पियेंगे।

उसके रक्स ने अजब समाँ बाँध दिया था करारे नोटों की बौछार मंच पर हो रही थी। मनचले फब्तियाँ कस रहे थे, कुछ शोहदे तो मंच पर चढ़ कर उसे छूने की कोशिश करने लगे थे, उन्हें परे हटा दिया गया था।

कई बार उसने मुझे भी देखा था, पर मैं यह सब देख न सका और चुपचाप वहाँ से चला गया था।

मेला समाप्त हो गया था, और उसका भी गाँव से विदा होने का वक्त आ गया था। पिछले सात दिन उसने भरपूर नाच किया था और पिछले इन सात दिनों में वो इलाके की मशहूर पतुरिया बन गई थी। मैंने हर रोज इसका नाच देखा था, पर मैंने मुलाकात की कोशिश नहीं की थी, पर मैंने आज उससे मिलने का इरादा कर लिया था।

गाँव के प्रधान के घर के बाहर बने बंगले में इस विशेष पतुरियों के ग्रुप के रूकने की व्यवस्था थी। मैंने उससे तन्हाई मैं मिलने का अवसर ढूँढ़ लिया था। जब मैं बँगले में पहुँचा तो वो अकेली थी। मुझे देख के बोली आइये ठाकुर साहब, मुझे लगा वो व्यंग कर रही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने कहा आपकी तो बड़ी पूछ रही है।

वो हँसते हुए बोली सब आप लोगों कि महिमा है। पिछले सात दिन में आपके सभ्य समाज ने एक लड़की को रन्डी बना दिया है।

सुनकर मुझे धक्का लगा यूँ जैसे किसी ने गाली दे दी हो।

मैं खामोश रहा शायद बोलने को कुछ था ही नहीं, मुझे खामोश देखकर वहीं बोली थी–

आदित्य, मैं भूल गई थी मेरी तो जात ही 'रन्डी' है, तवायफों के घर में जो पैदा हुई हूँ, पर मेरे कोमल मन ने किसी को चाहा था, पवित्र प्रेम का अंकुर फूटा था मेरे मन में, जिसे बेदर्दी से कुचल दिया गया है।

मैं तुम्हें अब प्यार करता हूँ देवयानी मैं उसके करीब आते हुए बोला था।

कुछ देर मेरा चेहरा निहारने के बाद वो घुटनों के सहारे मेरे कदमों के पास बैठ गई थी फिर वो हाथ जोड़ते हुए बोली बहुत भोले हैं आप, पर अब ये मुमकिन नहीं।

तड़प कर बोला था मैं, क्यों देवयानी क्यों।

उसकी आंखों में आँसू छलछला आए थे बोली थी, कितना अच्छा लगता है ये मेरा नाम जब तुम पुकारते हो, पर यही नाम मेरी जान लेता है जब मनचले इसे लेकर फब्तियाँ कसते हैं।

मैं बोला था–सारी दुनिया से दूर ले जाऊंगा मैं तुम्हें देवयानी अपनी प्रियतमा बनाकर।

नहीं आदित्य मैंने कहा न ये मुमकिन नहीं तुम नहीं जानते आदित्य मैं तुम्हारे ही रिश्ते में तुम्हारी बुआ, बहन या भतीजी होऊँगी भूल जाओ मुझे आदित्य, तुम्हारी प्रेयसी तुमसे वचन माँगती है।

सच पूछो तो उसने उस दिन न जाने क्या कहा था। मेरी वो प्रियतम जो कभी मेरी थी ही नहीं, उसे वचन दिया था, उसे भूल कर बड़ा आदमी बनूँगा।

चली गई थी वो, मैंने देखा था, पूरे गाँव के लोग उसके पीछे भाग रहे थे। उसमें से कुछ तो उस जगह की मिट्टी उठा रहे थे। जहाँ से वो पाँव रखकर गुजर रही थी और मैं मूक खड़ा देखता रहा था, बेबसी से जाते हुए अपनी प्रियतमा को अपनी आंखों में आंसुओं का सैलाब लिये हुये।

वक्त गुजर गया था और मैं आई०ए०एस बन गया था। इस वक्त मैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शादीशुदा जिंदगी गुजार रहा था। श्वेता हर लिहाज से मेरी अच्छी पत्नी साबित हुई थी।

वक्त ने, या यूँ कहो श्वेता के प्रेम ने देवयानी की यादों को मेरी यादों से खुरच दिया था।

पर आज जब मैं गाँव छुट्टी आया था तो वही मौसम था गाँव में मेले का मौसम वहीं हर नुक्कड़ पर पतुरियों का नाच। आज हर नवयुवक और बुजुर्गों के होठों पर किसी कमसिन पतुरिया कामायनी की चर्चा थी। वही हवेली थी मेरी, वही हॉल, फर्क इतना था अबकी बार नाच मैंने छुपकर नहीं देखा था। इस बार मैं मनसद के सहारे बैठा था।

पुरानी यादें ताजा हो गई थी वो देवयानी ही थी, हाँ उसका शरीर थोड़ा थुलथुला हो गया था, पिछले पंद्रह–बीस साल में सब पतुरियों की हैड बन गई थी, मुँह में पान के कत्थे की लाली थी।

मुझे देखकर हँसते हुए बोली थी, आइये ठाकुर साहब, आपको हसीन कमसिन नाजनीन का नाच दिखाते है, ये है तो मेरी बेटी पर आप भी अपना कोई रिश्ता ढूँढिये इस खाकसार में।

आओ कामायनी ठाकुर लोग आ गये है, मैंने देखा उन पतुरियों के बीच से एक लड़की जिसने दुपट्टे से चेहरा ढक रखा था उसने उठ कर सबको सलाम किया था फिर उसने अपने चेहरे से दुपट्टा उठाया था।

वह चौदह–पन्द्रह साल की हसीन लड़की थी जो अपने जमाने की देवयानी से भी कहीं ज्यादा खुबसूरत थी। मेरे जहन को तीव्र झटका था। उस लड़की के नैन नक्श मेरे चाचा से मिलते थे।

तबले की थाप पर उसने रक्स शुरू किया था, उसके कदमों की लय पर लोग वाह–वाह कर उठे थे और मैं शर्म से नजरे झुका कर फर्श पर बिछा कालीन देखने लगा था, जिस पर उसके दुधिया पाँव बिजली की रफ्तार से थिरक रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुधीर मौर्य 'सुधीर'

जन्म - 01-11-1979, कानपुर
माता - श्रीमती शकुन्तला मौर्य
पिता - स्व. श्री राम सेवक मौर्य
पत्नी - श्रीमती शीलू मौर्य
शिक्षा - अभियांत्रिकी में डिप्लोमा, इतिहास और दर्शन में स्नातक प्रबंधन में पोस्ट डिप्लोमा.
सम्प्रति - इंजिनियर, और स्वतंत्र लेखन.

प्रकाशित कृतियाँ - 'आह' (ग़ज़ल संग्रह), 'अमलताश के फूल' (उपन्यास)
'एक गली कानपुर की' (उपन्यास), 'हो न हो' (नज़्म संग्रह)
'किस्से संकट प्रसाद के' (व्यंग्य उपन्यास)
'अधूरे पंख' (कहानी संग्रह)

शीघ्र प्रकाश्य कृतियाँ - 'लम्स' (ग़ज़ल और नज़्म संग्रह)
'बुद्ध से संवाद' (काव्य खंड)
'देवलदेवी एक संघर्षगाथा' (ऐतिहासिक उपन्यास)

संपर्क - ग्राम और पोस्ट- गंज जलालाबाद,
जनपद-उन्नाव, पिन-209869, उत्तर प्रदेश
ई-मेल - sudheermaurya1979@rediffmail.com
sudheermaurya2010@gmail.com
ब्लॉग - http://sudheer-maurya.blogspot.com

₹ 80 $ 6

ISBN 978-81-927746-5-7

9788192774657

अंजुमन प्रकाशन
942 आर्य कन्या चौराहा
मुट्ठीगंज, इलाहाबाद - 211003
उत्तर प्रदेश, भारत
www.anjumanpublication.com
anjumanprakashan@gmail.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant